कल, आज और कल भी बहुपयोगी

**विश्व स्नेह समाज**

मासिक, वर्षः13, अंकः 01 अक्टूबर 2013

**आईएसएसएन संख्याः** 2321—9645

**मुख्य संरक्षक**

श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य

डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

**सम्पादक**

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

**प्रबंध सम्पादक**

श्रीमती जया

विज्ञापन प्रबंधक

महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो

ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी

सहयोग राशि

| | |
|---|---|
| एक प्रति | : रु0 10 / — |
| वार्षिक | : रु0 110 / — |
| पंचवर्षीय | : रु0 500 / — |
| आजीवन सदस्य | : रु0 1500 / — |
| संरक्षक सदस्य | : रु0 5000 / — |

संपादकीय कार्यालय

एल.आई.जी.—93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011 **का0ः** 09335155949

ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से idkf'kr djk;k x;k

if=dk esa izdkf'kr fdlh Hkh jpuk ds fy, ys[kd Lo;a ftEesnkj gksaxsA if=dk ifjokj] izdk'kd ;k laiknd dk blls dksbZ ysuk nsuk ugha gksxkA fookn ds lHkh ekeys U;k;ky; {ks= bykgkckn gksaxsA

# इस अंक में......

साम्प्रदायिकता से कम खतरनाक नहीं है भ्रष्टाचार का दानव
-तनवीर जाफरी, समाज प्रवाह, मुंबई.............. 06

राजनीति का बदलता चरित्र ....................08
-हितेश कुमार शर्मा

प्रिंट मीडिया का भविष्य ............10
-डॉ० विकास मानव

शिक्षा में पर्यटन विधि या भ्रमण विधि- .....................12
-डॉ० सीताराम अधिकारी

जो दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाता है खुद चंगा हो जाता है-
सीताराम गुप्ता........15

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग 04

अपनी बातः आखिर कब तक एक ही रावण को जलाते रहेंगे 05

पर्व विशेषः सुख समृद्धि व शक्ति का पर्व नवरात्र-**देवदत्त शर्मा** १३

पर्व विशेषः दशहरा मनाने का औचित्य-धर्म सिंह ठाकुर............१७

हिन्दीतर भाषीः कविताएं-डॉ०अकेला भाई, हरिहर चौधरी,
अन्य-डी.के.लिंगराज, जे.वी.नागरत्नमा .................. 20

**कविताएंः**

प्रोमिला भारद्वाज, हरिचरण वारिज, मोहित कुमार गोस्वामी ....... 21

ग़ज़ले-भगवान दास जैन, सरदार पंछी.. ........ 22

**कहानीः** तुलसी-मोहन आनन्द तिवारी 23

**अध्यात्मः** जीवन के उस पार -डॉ० अरुण कुमार आनंद 25

साहित्य समाचार- 26,28, 29, 31, 32

स्वास्थ्य 27

आपकी डाक 30

लघु कथाएँः रोहित यादव, शबनम शर्मा ..............33

समीक्षा 34

**मी**ठे बोल कितने अच्छे लगते हैं. कोयल की कूक, वीणा की तान, सरगम के स्वर. इनमें सहज ही आकृष्ट करने की शक्ति होती है.

**प**पीहा की पी कहां, करुणा की पुकार सभी को द्रवीभूत करती है. इनमें वेदना की व्यथा विद्यमान है.

**को**ई वस्तु किसी के लिए सुख, किसी को दुःख का कारण बनती है, जैसे चॉदनी रात, मेघाच्छित रिमझिम वर्षा, सुन्दर उद्यान, पावस रजनी, कलकल नाद, मधुररागिनी प्रियतम के सानिध्य में युवती को अच्छी लगती है, वही वियोग से तप्त रमणी को दुःख का कारण बनती है.

**जि**सको हम याद करते हैं, जो सदा आंखो में बसा रहे और यदि उसे हमारी तनिक भी चिन्ता न हो तो हम कैसे सन्तोष करें? हम कैसे उसका मनन ध्यान करते रहें, हम कैसे उसकी अभ्यर्थना, वन्दना करें? हम इसी आशा पर कैसे, कब तक जीते रहें.

**भा**रतीय नारी सदा ही अपने विशिष्ट गुणों के लिए पूज्य रही है, नारी नर का आभूषण कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं और उसी का शोषण, हमारी आदि परम्परा का कितना पतन है, हम सींच नहीं पाते. नारी आदि शक्ति जगदम्बा देवी का रूप है. इसकी छाया जिस मरुस्थल में पड़ जाय हरियाली छा जाय. उसकी भृकुटि जिधर टेढ़ी हो जाय, बिनाश लीला प्रस्तुत होने लगे. कितनी शक्ति है इस साक्षात् दुर्गा स्वरुपा नारी में.

**भा**रतीय नारी आदि काल में नर की सहचरी, सहधर्मिणी तथा अर्धांगिनी के रूप में पूज्य थी. मध्य युग में पल्टा खाया उसका शोषण किया जाने लगा. सर्वज्ञ कहने वाले पुरुष ने उसे दासी की पदवी से विभूषित किया, उसके गुणों को भूलकर उसक अवहेलना करने लगा, उसका दुरुपयोग करने लगा, परिणाम स्वरुप परतन्त्र हुआ. आज पुनः उसकी महत्ता स्वीकार की जाने लगी, फिर भी अभी पूर्ण रुपेण हम इसके महत्व को स्वीकार नहीं करते हैं. जिस दिन से हम इस देवी की श्रद्धा करने लगेंगे, हम उत्थान की सीमा में पहुंच जायेंगें. -दाउजी

# आदाब अर्ज़ है

**म**न में बसता मैल है, शब्दों में श्रृंगार।
कत्सित करता रूप को, मन का यही विकार।।
होठों पर तो राम हैं, रखते बगल कटार।
ऐसे मानव का भला, कैसे हो उद्धार।।
ना गुलाल ना इत्र है, गीता श्वेद रूमाल।
प्रियतम की इस गंध से, रहते हैं खुशहाल।।
संस्कार सब खो गये, बेढंगी है चाल।
फूहड़ नकलें कर रहे, ओढ़ विदेशी खाल।।
अलग अलग ये राह हैं, मंजिल लेकिन एक।
जन्म जन्म से ढूंढता, मिलते रहे अनेक।।
फल पाना अधिकार है, कर्मो के अनुरुप।
ईश्वर की हस्ती नहीं, बदले सत्य स्वरूप।।
-**कृष्ण स्वरुप शर्मा** 'मैथिलेन्द्र', नर्मदापुरम,मप्र.

**जी**वन में सन्तोष रख, रह प्रसन्न दिन-रात।
नहीं किसी से द्वेष कर, स्वस्थ रहेगा तात।।
सोना-जागना समय पर, सात्विक हो आहार।
स्वस्थ रहें तन-मन सदा, यदि हों शुद्ध विचार।।
मन-वाणी औ' कर्म से, बनें अहिंसक आप।
सबमें फिर ईश्वर दिखें, मिट जाए परिताप।।
जीवन में जो कुछ मिले, कर उसमें संतोष।
इससे बड़ा न सुख कहीं, कभी न व्यापे रोष।।
दुख औरों का दूर कर, कर सब का कल्यान।
अवगुण सारे त्याग दे, जीवन बने महान।।
मात-पिता-गुरु तीर्थ हैं, इन्हें पूज दिन-रात।
सेवा से सन्तुष्ट कर, सुख पायेगा तात।।
मन यदि तेरा शुद्ध तो, सभी तीर्थ हैं व्यर्थ।
ध्यान लगा कर दर्श पा, तू है सर्व समर्थ।।
क्यों आये क्या ले चले, जाने यह परमेश।
सबको रोता छोड़ कर, हंस गया किस देश।।
यह रहस्य गहरा बहुत, बुद्धि न करती काम।
गयी चेतना तन जला, रह जाता है नाम।।
-**प्रो०सुन्दरलाल कथूरिया**, नई दिल्ली

# आखिर कब तक एक ही रावण जलाते रहेंगे?

**प्र**काण्ड विद्वान रावण का पुतला हम प्रत्येक वर्ष जलाते हैं. जिसका मुख्य कारण यह था कि वह सीता का अपहरण करवाकर उन्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता था. चूंकि भगवान राम को हम हिन्दू धर्मावलम्बी अपना आराध्य मानते हैं और अपने आराध्य की पत्नी माता सीता का अपहरण कर उन्हें अपनी पत्नी बनाने की लालसा रावण के मन में थी इसके प्रतिफल में प्रतीक स्वरूप हम प्रत्येक वर्ष कुआर मास के विजय दशमी के दिन रावण के प्रतीक पुतले को जलाकर अपना विरोध प्रर्दशित करते हैं. उस रावण का पुतला जलाते हैं जो जन्म से राक्षस योनि का था. उसके मन में मानवीयता व स्त्री के प्रति सम्मान था. तभी तो उसने सीता के साथ जबरदस्ती नहीं की. वह चाहता तो सीता से बलपूर्वक विवाह कर सकता था, लेकिन उसने नहीं किया. वह राक्षस योनि का होने के बावजूद माता सीता की सहमति से उन्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता था. लेकिन आज इस कलयुग में रावणों की फौज खड़ी है. जहां देखों वहीं कलियुगी रावण दिखाई पड़ जाते है. जो कहने को तो मानव योनि में जन्म लिए हैं लेकिन इनके कृत्य तो उस राक्षस योनि के रावण से भी गये गुजरे हैं. प्रतिदिन पूरे देश में प्रकाश में सैकड़ों मामले आते हैं जिसमें कलियुगी रावणों द्वार कितनी सीताओं को जबरन हवस का शिकार बनाया जाता है. उनके बचपने, उनके स्त्रीत्व को मटियामेट कर दिया जाता है. और तो और कितनी सीताओं यानि मां/बहनों की तो ईहलीला ही समाप्त कर दी जाती है. इन रावणों को हम पूजते हैं. इनके कर्मो को जानकर भी उनका समादर करते हैं. वे संत के वेश में हो या असंत, नेता हो या अभिनेता, समाज सेवी हो या शिक्षक. हमें उस सतयुगी रावण की प्रतीकात्मक प्रतिमा को जलाने के बजाए विजय दशमी के दिन कलियुगी रावणों (बलात्कारियों, दानवों, आततायियों, आतंकवादियों, भ्रष्टाचारियों, चाटुकारों) के अंदर छुपे हुए रावणों को जलाने का प्रयास करना होगा. अगर हम प्रत्येक वर्ष पूरे देश में रावणों की फौज में से 100 रावणों के रावणत्व को भी समाप्त कर देगें तो उस सतयुगी रावण के पुतले को जलाने से अधिक कारगर व सराहनीय कार्य होगा और साथ ही कलयुगी रावणों की संख्या भी कम होगी.

आइए हम सब मिलकर इस दशहरे में यह संकल्प लें कि हम प्रत्येक वर्ष विजय दशमी के दिन एक मुहल्ले में नहीं तो कम से एक तहसील स्तर पर एक रावण के अंदर के रावणत्व को खत्म करेंगे. अगर एक तहसील स्तर पर भी प्रत्येक वर्ष एक रावणत्व का खात्मा होगा तो यह हमारी अपने अराध्य भगवान राम और माता सीता के प्रति सच्ची आस्था व धर्म का पालन होगा.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

# साम्प्रदायिकता से कम खतरनाक नहीं है भ्रष्टाचार का दानव

**भ्रष्टाचार को कुछ सरकारी विभागों में तो यथार्थ रूप में स्वीकार कर लिया गया है. इनमें अब रिश्वतखोर व भ्रष्ट व्यक्ति ही योग्य समझा जाता है, जबकि एक ईमानदार अधिकारी को सनकी अथवा पागल की संज्ञा दे दी जाती है.**

-तनवीर जाफरी,
समाज प्रवाह, मुंबई

विश्व के सबसे बड़ा धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र भारत जहां एक ओर विश्व के कुछ गिने-चुने प्रगतिशील देशों के बराबर खड़े होने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, वहीं दुर्भाग्यवश इसी देश में कुछ मानव निर्मित समस्याएं ऐसी हैं, जो इस देश के विकास के लिए बाधा साबित हो रही हैं. इनमें साम्प्रदायिक शक्तियों का विस्तार इस देश की एक अहम समस्या है, वहीं भारतवर्ष में लगभग सभी क्षेत्रों में फैला भ्रष्टाचार भी साम्प्रदायिकता से कम खतरनाक नहीं है. हम भारतवासी केवल इस बात के लिए खुदा के शुक्रगुजार हो सकते हैं कि सम्भवतया अब तक इस देश के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तथा भारत के मुख्य न्यायाधीश व लोकसभा अध्यक्ष जैसे पदों पर ऐसे कोई व्यक्ति विराजमान नहीं हुए, जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हों. अन्यथा भ्रष्टाचार के प्रसार तथा विस्तार की सीमाओं को तो शायद आंका ही नहीं जा सकता.

हमारा देश भारतीय संसद में उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश के विरुद्ध महाभियोग चलते देख चुका है. हमने एक राज्यपाल के विमान की दुर्घटना के समय आसमान से भारतीय मुद्रा की बरसात होते देखी है. भारतीय मीडिया स्टिंग आपरेशन के द्वारा केन्द्रीय मंत्री, अनेक राज्य मंत्री, सांसद, विधायक, अफसरशाही से जुड़े लोग आदि सभी भ्रष्टाचार के आरोपी देखे जा सकते है. ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी.जे.अब्दुल कलाम तथा प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह जैसे देश के चंद जिम्मेदार लोगों द्वारा देश में फैले भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाने का आखिर कुछ सकरात्मक परिणाम मिलेगा भी अथवा नहीं? भ्रष्टाचार की जड़े इस देश में इतनी गहरी हो चुकी है कि कुछ सरकारी विभागों में तो इसे यथार्थ के रूप में स्वीकार कर लिया गया है. ऐसे विभागों में अब हालत यहां तक हो गई है कि रिश्वतखोर व भ्रष्ट व्यक्ति ही योग्य अथवा कमाउ पूत समझा जाता है, जबकि एक ईमानदार अधिकारी को सनकी अथवा पागल व्यक्ति की संज्ञा तक दे दी जाती है. कानपुर के भगवती प्रसाद दीक्षित का प्रकरण देश के लगभग सभी सुधी लोगों को पता है कि किस प्रकार भ्रष्टाचार में नीचे से लेकर ऊपर तक डूबे सरकारी तंत्र ने दीक्षित जैसे एक ईमानदार व कर्मठ इंजीनियर तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध सख्त से सख्त कदम उठाने की हिम्मत करने वाले इस अधिकारी को मानसिक रोगी तथा पागल बना दिया. और आखिरकार भ्रष्टाचारियों के विरुद्ध संघर्ष करते-करते वह व्यक्ति इस संसार से ही चल बसा. इसके अतिरिक्त सत्येंद्र दूबे, के. मंजूनाथन व मनोज गुप्ता जैसे और न जाने कितने ऐसे उदाहरण मिलेंगे, जिन्हें भ्रष्टाचारियों ने अपने रास्ते का कांटा समझ कर उनकी हत्या कर दी हो. निश्चित रूप से भ्रष्टचारियों के हौसले केवल निम्न स्तर पर भ्रष्टाचार फैलने मात्र से ही इतने नहीं बढ़ जाते कि बात हत्या या सीनाजोरी तक आ जाए. जब सिर से पैर तक पूरा का पूरा तंत्र ही भ्रष्टाचार में संलिप्त होता है, तभी भ्रष्टाचारियों के हौसले इस हद तक बढ़ पाते हैं.

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने केन्द्रीय जांच ब्यूरो तथा देश के सभी राज्यों की भ्रष्टाचार निरोधक एजेंसियों के एक सम्मेलन में बड़ी गंभीरता से देश में फैले भ्रष्टाचार पर अपनी बेबाक टिप्पणी देते हुए यह स्वीकार किया कि देश में व्यापक तौर पर यह धारणा बनी हुई है कि छोटे-मोटे मामलों में तो फौरन कार्यवाही होती है परन्तु बड़ी मछलियां सजा से बच जाती है. उन्होंने कहा कि देश के आम लोगों में फैली इस धारणा को बदलने की जरुरत है. प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने यह भी कहा कि उच्च स्तर पर जो भ्रष्टाचार फैला है, उस पर सख्ती के साथ नज़र रखनी होगी. उन्होंने कहा कि ऐसे सभी मामलों में प्राथमिकता के आधार पर प्रत्येक आरोप की निष्पक्ष रहकर तेजी से सही-सही जांच होनी चाहिए. प्रधानमंत्री के इस वक्तव्य के बाद देश के उन उच्च स्तरीय भ्रष्टाचारियों के चेहरों पर चिंता की लकीरे अवश्य खींच गई है, जो अपने पद का दुरुपयोग कर भ्रष्टाचार द्वारा धनार्जन करने तथा अपनी अगली नस्लों के वासते अकूत

संपत्ति जुटाने में लगे रहते हैं.

देश के आम नागरिकों ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के इस स्पष्टवादिता से भरे बयान को गंभीरता से लिया है तथा प्रधानमंत्री के इस वक्तव्य के बाद निश्चित रूप से अब जनता की निगाहें इस ओर जा टिकी है कि देखें अब प्रधानमंत्री की ओर से हरी झंडी मिलने के बाद भ्रष्टाचार निरोधक जाल में सबसे पहली बड़ी मछली कौन-सी फंसती है? प्रधानमंत्री की साफ़गोई तथा कुछ कर गुजरने के उनके हौसले को लेकर इस देश में कोई बहस नहीं है. यह बात गत लोकसभा चुनावों में उस समय और प्रमाणित हो गई जब देश के मतदाताओं ने उन शक्तियों को ही राजनीतिक परिदृश्य से मिटा दिया, जो मात्र सत्ता हासिल करने के लिए मनमोहन सिंह को कमजोर प्रधानमंत्री साबित करने के प्रयास कर रहे थे. राजनैतिक हलकों में उनके सिख समुदाय से जुड़े होने को लेकर तरह-तरह की बातें की जाती है. परन्तु स्वयं मनमोहन सिंह ने पिछले लोकसभा चुनावों के दौरान जनसभा में साफ़तौर पर यह कहा कि सर्वप्रथम मैं इस देश का प्रधानमंत्री हूं. उन्होंने यह भी कहा कि वे धर्म व राजनीति के मिश्रण के विरोधी है. जबकि उसी सभा में राहुल गांधी ने मनमोहन सिंह को भारत का गौरव बताया था. सत्तारूढ़ गठबंधन के सबसे बड़े दल की हैसियत रखने वाली कांग्रेस पार्टी ने पिछले चुनाव में देश की जनता को यह बताने की कोशिश की थी कि कांग्रेस का हाथ, आम आदमी के साथ. निश्चित रूप से आज देश का आम आदमी इस नारे को क्रियान्वित होते हुए देखना चाहता है. और यदि देश का आम आदमी वास्तव में यह महसूस करता है कि सरकार उसके साथ खड़ी है तथा उसे न्याय मिल रहा है, तो वही आम जनता उस सरकार या राजनैतिक दल का साथ देने से भी परहेज नहीं करती. इसका एक छोटा-सा उदाहरण उत्तर प्रदेश में विगत संसदीय चुनावों के दौरान देखा गया. उत्तर प्रदेश में ३६ जिलों में कांग्रेस पार्टी का प्रदर्शन सबसे बेहतर रहा, जहां देश के बेरोजगारों को रोजगार मुहैया कराने वाली योजना राष्ट्रीय रोजगार गांरटी योजना (नरेगा) लागू हुई थी. जिन-जिन क्षेत्रों में बेरोजगारों को इस स्कीम के तहत पूरी पारदर्शिता से रोज़गार मिला तथा वर्षो के बाद जिन लोगों ने दो वक्त की रोटी खाई तथा रोजी-रोटी के लिए उन्हें परेदस जाने से निजात मिली, ऐसे लोगों ने कांग्रेस पार्टी की जय हो की आवाज से अपनी आवाज मिला दी. दरअसल आज देश का आम आदमी साफ-सुथरा प्रशासनिक ढांचा, पारदर्शी व्यवस्था तथा भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण देखना चाहता है और निश्चित रूप से यह तभी संभव है, जब भ्रष्टाचार समाप्त हो. भारत में समस्या इस बात की है की चाहें वह जीवन-रक्षक दवाइयों अथवा खाद्य सामग्री में मिलावट करने वाले व्यक्ति हो, चाहे आर्थिक अपराध करने वाला बड़े से बड़ा मास्टर माइंड या फिर कोई गैगस्टर, पेशेवर अपराधी अथवा किसी अन्य बड़ी से बड़ी अपराधिक प्रवृत्ति में संलिप्त कोई व्यक्ति ऐसे दुष्चरित्र लोगों को यहां फौरन ही बड़े से बड़ा राजनैतिक संरक्षण मिल जाता है और इस इस राजनैतिक संरक्षण के बाद मध्यम व निम्न स्तर के अधिकारी अपने आप लाचार बन जाते है. ऐसे में इन चंद ईमानदार अधिकारियों के समक्ष दो ही उपाय बचते हैं कि या तो वे उस उच्च श्रेणी के राजनैतिक हस्तक्षेप का सामना करते हुए अपने निलंबन अथवा नौकरी से हाथ धोने तक की नौबत का सामना करें. ऐसे भ्रष्ट नेटवर्क का कोपभाजन बनें या फिर उनकी नाज़ायज़ बातें मानकर मुख्य धारा में शामिल हो जाए. हम चीन की बढ़ती हुई ताकत से प्रायः चिंतित दिखाई देते हैं. परन्तु उनकी शक्ति तथा शासन प्रणाली के मूलमंत्र को हम नज़रअंदाज़ कर देते हैं. चीन में ऐसे दो व्यक्तियों को फांसी दे दी गई, जो जान लेवा नकली दूध का नेटवर्क चलाते थे. परन्तु हमारे देश में न जाने कब से नकली दूध, ज़हरीली सब्जियां, मिलावटी रसद सामग्रियां और यहां तक कि अब तो मिलावटी खून तक भारतीय बाजार में उपलब्ध होने के प्रमाण मिल रहे हैं. ऐसे में प्रधानमंत्री की चिंताएँ वाजिब व न्यायसंगत है बल्कि उनकी चिंताओं को कार्यरूप दिये जाने की भी तत्काल ज़रूरत है.

जीवन-रक्षक दवाइयों, खाद्य सामग्री में मिलावट करने वाले, पेशेवर अपराधी अथवा किसी अन्य अपराधिक प्रवृत्ति में संलिप्त कोई व्यक्ति ऐसे लोगों को यहां फौरन बड़ा राजनैतिक संरक्षण मिल जाता है. परिणामस्वरूप चंद ईमानदार अधिकारियों के समक्ष दो ही उपाय बचते हैं या तो वे उच्च श्रेणी के राजनैतिक हस्तक्षेप का सामना करते हुए अपने निलंबन या नौकरी से हाथ धोने तक की नौबत का सामना करें अथवा भ्रष्ट नेटवर्क का कोपभाजन बनें.

# राजनीति का बदलता चरित्र

**प**हले चरण में देशभक्त नेता सांसद और विधायक बनें, दूसरे चरण में व्यापारी वर्ग, तीसरे चरण में बाहुबली, माफिया और अपराधीयों ने संसद व विधायक बनें तब से यही क्रम चल रहा है. इनका मकसद सिर्फ लूट-खसोट होता है.
लाल बहादुर शास्त्री केवल उतना ही वेतन लेते थे, जितना उन्हें आवश्यक था. नेताओं के पास अपने मकान भी नहीं होते थे किन्तु अब प्रत्येक नेता के कई-कई मकान और फार्म हाउस होते हैं.

**हितेश कुमार शर्मा,** बिजनौर, उ०प्र०

**आ**जादी से पहले और आजादी के बाद के राजनीतिक चरित्र में बहुत बदलाव आया है. पहले राजनीति में सम्भ्रांत देशभक्त लेग सम्मिलित हुए थे, जिन्होंने तन-मन-धन देश को समर्पित करते हुए आजादी की लड़ाई में भाग लिया, लाठियाँ खाई, घर-द्वार छोड़ा, जेल गए. आजादी के बाद भी पहले चरण में ऐसे ही लोग रहे, जो देशभक्त थे. चुनाव के दौरान धन की आवश्यकता के लिए इन्हें देश के भामाशाहों की तरफ देखना पड़ता था क्योंकि इनके पास धन नाम की कोई पूंजी नहीं थी. पहले चरण में व्यापार वर्ग के सहयोग से ऐसे ही लोग देश के सांसद और विधायक बनें. सब कुछ ठीक चल रहा था लेकिन धीरे-धीरे व्यापारी वर्ग को यह अहसास हुआ कि देश के कर्णधार हमारे ही ही धन से चुनाव लड़ते हैं और हमारे ही सर पर बैठते है. इससे तो अच्छा है कि हम स्वयं ही चुनाव लड़े और यह सोचकर दूसरे चरण में व्यापारी वर्ग स्वयं चुनाव मैदान में आ गए किन्तु धनबल के साथ बाहुबल की भी आवश्यकता हुई. अतः बाहुबलियों का भी सहयोग व्यापारी वर्ग द्वारा लिया गया. यहां तक तो सभी कुछ कुछ ठीक था किन्तु कुछ समय पश्चात बाहुबलियों को भी यह लगने लगा कि हमारे कारण ही व्यापारी वर्ग चुनाव जीतता है तो यदि हम ही चुनाव लड़े तो हमें सत्ता भी मिलेगी और अपने काम के लिए किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा तथा सुरक्षित भी रहेंगे और तीसरे चरण में स्वयं बाहुबली चुनाव मैदान में उतर पड़े. चुनाव लड़ते हैं बाहुबली, माफिया तथा अपराधी और चुनाव के लिए जबरदस्ती धन प्राप्त करते हैं व्यापारी वर्ग से और जीतकर सत्तासीन हो जाते हैं. देश प्रेम का तो सवाल ही नहीं यह लोग केवल लूट-खसोट के लिए सत्ता में आते हैं.

प्रथम चरण में सत्ता में आये नेताओं में लूट और घोटालों की तो बात हीं नहीं थी बल्कि वह देश का धन भी अवैधानिक तरीके से प्राप्त नहीं करते थे. लाल बहादुर शास्त्री केवल उतना ही वेतन लेते थे, जितना उन्हें आवश्यक था. जमा के नाम पर उनके पास चन्द रुपयों के अलावा कुछ नहीं था, ऐसी बहुत सी मिसालें हैं ऐसी. उस समय काले धन का कोई प्रचलन नहीं था. श्वेत और ईमानदारी से कमाया हुआ धन भी जमा के नाम पर एकत्रित नहीं होता था. किन्तु अब काले धन का तो कोई हिसाब ही नहीं है श्वेत धन भी लोग जमा करने में विश्वास रखते हैं. अब देश प्रेम का स्थान धन प्रेम ने ले लिया है. पहले ईमानदार नेताओं के पास अपने मकान भी नहीं होते थे किन्तु अब प्रत्येक नेता के कई-कई मकान और फार्म हाउस होते हैं.

आजादी के बाद नग्नता बढ़ी है. पहले महिलाएं सर ढ़ककर, शरीर का कोई अंग हाथ को और चेहरे को छोड़कर कपड़ों से बाहर नहीं निकालती थीं पहले फिल्मों में भी सुरईया, नरगिस, मीनाकुमारी, माला सिन्हा आदि बगैर कपड़ों के दिखाई नहीं देती थीं और अब प्रत्येक फिल्म में अर्द्धनग्न अभिनेत्रियां दिखाई देती हैं. पहली फिल्में ऐतिहासिक होती थी, जिनमें चरित्र निर्माण की बात मुख्यतः होती थी अब मुख्यतः चरित्रहीनता दिखाई जाती है.

एक समय था जब देश का पैसा व्यर्थ खर्च करना अथवा अपने ऊपर खर्च करना नेतागण गलत समझते थे और अब देश के पैसे का दुरुपयोग आम बात हो गई है. वर्तमान में बनाये गये पुल पहले साल में ही टूटते नजर आने लगते है, जबकि पुराने बने पुल आज तक कायम है. पहले एक दो गद्दार थे और अब एक दो देशभक्त नजर आते हैं. प्रजातंत्र के नाम से अब परिवारवाद घुस आया है. शायद ही कोई नेता बचा हो जिसके बच्चे हो

और राजनीति में न हो. सियासत को रियासत और विरासत से जोड़ दिया गया है. एक की व्यक्ति दस-दस बार सांसद बनके संसद में आकर बैठता है. राजनीति बदल चुकी है, पहले विधायक अपना नेता चुनते थे अब नेताजी विधायक चुनते हैं. पहले पार्टी अपने प्रत्याशी को आर्थिक सहयोग प्रदान करती थी और अब पार्टी आर्थिक सहयोग प्राप्त करके प्रत्याशी को टिकट देती है.

पहले नेतागण उस व्यक्ति की प्रशंसा करते थे, जो नियमों का पालन करता था, जो ईमानदार था. दैनिक कामकाज में नेताओं का हस्ताक्षेप नहीं होता था. अब नेतागण प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप करते हैं. न्यायिक कार्य हो अथवा पुलिस कार्यवाही नेताओं का हस्तक्षेप आपको हर स्थान पर मिलेगा. इस बदलते परिवेश मे प्रत्येक व्यकित अपने पद का दुरुपयोग करने में लगा हुआ है जबकि विगत समय में लोग निष्ठा से कार्य करने को सम्मानजनक मानते थे. अब बगैर सुविधाशुल्क के कोई कार्य नहीं होता और जो सुविधा शुल्क नहीं दे पाता उसका काम अटक जाता है. पहले रिश्वत लेने को पाप समझते थे और अब रिश्वत न लेने को पाप समझते है, जो व्यक्ति रिश्वत नहीं लेता उसको मूर्ख और बुद्धू की उपाधि दी जाती है. नेतागण थाने में अपराधियों की पैरवी करते नजर आते हैं जबकि पहले अपने संबंधी अपराधी को भी नेतागण अपना मानने से इंकार कर देते थे.

देशभक्त नेतागण पहले नियत फीस और शुल्क देकर कार्य करते थे. अब रेल में बगैर टिकट यात्रा करना, बिजली के बिल का भुगतान न करना, टेलीफोन के बिल का लंबित रखना, अनाधिकृत यात्रा भत्ते प्राप्त करना ये सभी नेतागण के दैनिक कार्य में सम्मिलित हो गये हैं.

जब तक पुनः राजनीति का चौथा चरण देशभक्ति, सत्यनिष्ठ, देशप्रेम, जनसेवा और प्रजातंत्रवाद का नहीं आएगा औरे ऐसे नेता उत्पन्न नहीं होंगे, जो देशप्रेम से ओतप्रोत हो तथा सत्यनिष्ठा से जनसेवा करना चाहते हैं तब तक वर्तमान परिस्थिति बदलनी नहीं है. कालेध ान के विरुद्ध कितना भी शोर मच जाए किन्तु जिनके पास काला धन है वही शीर्ष पर बैठे हैं. अतः काले धन की बीमारी समाप्त होने वाली नहीं है. भ्रष्टाचार जड़ से लेकर चोटी तक व्याप्त हो चुका है, जिसको मिटाना स्वयं को मिटाने के समान है.

पहले सांसद और विधायक अपने घर से धन खर्च करके जनकल्याण के कार्यो के कार्यो को कराते थे अब जनकल्याण और विकास हेतु जो सांसद और विधायक निधि प्राप्त होती है उसको भी निष्ठा से व्यय नहीं करते हैं. अतः देश का कल्याण कैसे हो सकता है? जब देश के कर्णधार ही निष्ठा से भटक जाए देश के स्थान पर स्वयं को रखने लगे, समाज के स्थान पर अपने परिवार को रखने लगे, प्रजातंत्र के स्थान पर एकतंत्र हावी हो जाए तब कुशलता कहां मिलेगी. लगता है इतिहास स्वर्णाक्षरों के बजाय काले धन के समान काले अक्षरों से लिखा जाना है.

पहले विधायक अपना नेता चुनते थे अब नेताजी विधायक चुनते हैं. पहले नेताओं का दैनिक कामकाज में कोई हस्ताक्षेप नहीं था, अब प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप करते हैं. अब बगैर सुविधाशुल्क के कोई कार्य नहीं होता है. राजनीति का चौथा चरण देशभक्ति, सत्यनिष्ठ, देशप्रेम, जनसेवा और प्रजातंत्रवाद का लाना होगा. वरना इतिहास स्वर्णाक्षरों के बजाय काले धन के समान काले अक्षरों से लिखा जाएगा.


**विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के 10 वार्षिक सदस्य बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.**

**10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।**

संपादक-विश्व स्नेह समाज मासिक,
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

**जनसंदेश**

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करेंः-एस.पी. सीबीआई, लखनऊ -0522-2201459, 2622985 और एस.एम.एस 9415012635

# प्रिंट मीडिया का भविष्य

**रा**जनीति में कोई उथल-पुथल हो जाए तो प्रिंट मीडिया का स्कोर घट जाता है और लोग टीवी का सहारा लेते हैं. जब टीवी आया तो लगा कि प्रिंट मीडिया समाप्त हो जाएगा. टीवी और इंटरनेट का बहुत शोर होने के बावजूद प्रिंट मीडिया के प्रसार में वृद्धि जारी है. एक अवसर ऐसा भी आया जब यह माना जाने लगा था कि पत्रिकाओं का युग समाप्त हो गया है लेकिन वर्ग विशेष पर फोकस वाली पत्रिकाओं की बढ़ती संख्या और प्रसार ने सफलता के नये कीर्तिमान गढ़े हैं. अतः यह कहना गलत है कि प्रिंट मीडिया खतरे में हैं.

**डॉ० विकास मानव**
संपादक-ग्लोबल वर्ल्ड

**ज**माना बदलता है, जमाने के साथ तकनीक बदलती है, तकनीक के साथ जरूरते बदलती है, जरूरतों के साथ आदतें बदलती हैं और आदतें बदलने से उत्पादों की खपत के तरीके बदलते हैं. बहुत से नये आविष्कार ऐसे होते हैं जो क्रांति ही ला देते हैं.

इंटरनेट भी एक ऐसा ही युगांतकारी आविष्कार है. राजनीति में कोई उथल-पुथल हो जाए या मैच चल रहे हों तो प्रिंट मीडिया का स्कोर घट जाता है और लोग टीवी या इंटरनेट का सहारा लेते हैं.

करुणानिधि की पार्टी डीएमके द्वारा यूपीए सरकार से बाहर होने की घोषणा हो या मैच का हाल जानना हो तो लोग उसे टीवी पर तभी के तभी 'लाइव' देखना चाहते हैं. सचिन तेंदुलकर का शॉट लगे तो उसे देखने का जो मजा है, उसका वर्णन किसी भी प्रकार से नहीं किया जा सकता. कमेंटेटर चाहे कितना ही कहे कि 'सचिन ने क्या बढ़िया शॉट लगाया है.' वह वर्णन शॉट देखने के आनंद के आसपास भी नहीं आ सकता. लेकिन जब आदमी काम पर हो और टीवी देखने की सुविधा उपलब्ध न हो तो अपने मोबाइल से इंटरनेट पर जाकर भी क्रिकेट का हाल जाना जा सकता है और बॉल-टु-बाल स्कोर का वर्णन लाइव जाना जा सकता है.

इसी प्रकार राजनीति की उथल-पुथल के समय भी टीवी और इंटरनेट पर तो खबर तुरंत आ जाएगी लेकिन चूंकि अखबार अपने समय से पहले नहीं छप सकते. अतः ऐसे मामलों में वे पिछड़ जाते हैं. इस सबके बावजूद भारतवर्ष में भाषाई अखबारों की बढ़ती बिक्री के कारण भारतीय मीडिया घरानों ने इंटरनेट का लाभ उठाने की फुर्सत नहीं निकाली है. हमारे देश के बहुत से बड़े अखबारों के ऑनलाइन संस्करण भी उपलब्ध है परंतु वे प्रिंट संस्करण की छाया मात्र है.

फिलहाल बहुत से मीडिया घरानों के लिए उनका ऑनलाइन संस्करण एक फैशन मात्र है, उनका कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं है, उनके लिए कोई योजना भी नहीं हैं और न ही उनकी स्वतंत्र मार्केटिंग के साधन है. परिणाम यह हुआ है कि पत्र-पत्रिकाओं के इंटरनेट संस्करण आय का ऐसा स्रोत नहीं बन पाये हैं कि मीडिया घरानों के मालिक उनकी ओर ध्यान दे पायें. यह एक ऐसा चक्कर है जिसमें फंसकर मीडिया घराने घनचक्कर बने हुए है.

जब टीवी आया तो लगा कि प्रिंट मीडिया समाप्त हो जाएगा. जब इंटरनेट आया, तब फिर लगा कि प्रिंट मीडिया समाप्त हो जाएगा. इंटरनेट का बहुत शोर होने के बावजूद प्रिंट मीडिया के प्रसार में वृद्धि जारी है. ज्यादातर अंग्रेजी अखबारों की प्रसार संख्या घटी है जबकि भाषाई अखबारों का प्रसार बढ़ा है. इससे दोनों को लाभ हुआ है. अंग्रेजी अखबारों का प्रसार घटा है लेकिन उन्हें विज्ञापनों से होने वाली आय में कमी नहीं आयी है और भाषाई अखबारों की प्रसार संख्या बढ़ने से विज्ञापनदाताओं का फोकस भाषाई अखबारों की तरफ बढ़ा है.

एक अवसर ऐसा भी आया जब यह माना जाने लगा था कि पत्रिकाओं का युग समाप्त हो गया है लेकिन वर्ग विशेष पर फोकस वाली पत्रिकाओं की बढ़ती संख्या और प्रसार ने सफलता के नये कीर्तिमान गढ़े हैं. अतः यह कहना गलत है कि प्रिंट मीडिया खतरे में हैं. प्रिंट मीडिया की अपनी संभावनाएं है, हां यह सही है कि उन्हें टीवी और इंटरनेट के कारण कई नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है.

इंटरनेट से दरपेश चुनौतियों के कारण अमेरीका में बड़े-बड़े अखबार बिकने के लिए विवश हुए. नये प्रकाशकों ने अखबार खरीद तो लिए पर प्रकाशन व्यवसाय से अनजान होने के कारण उनमें से ज्यादातर लोग सफल नहीं हो पाये. भारतीय प्रकाशकों को अभी ऐसी नौबत का सामना नहीं करना पड़ रहा है. परंतु उन्हें यह याद रखना चाहिए कि इंटरनेट में ३-जी की शुरुआत हो चुकी है और संपन्न वर्ग के

युवा लोग खबरों को मोबाइल फोन पर ही देखने के अभ्यस्त होते जा रहे हैं. जैसे-जैसे इंटरनेट का प्रसार बढ़ेगा, लोगों की आदतें कुछ और बदलेंगी और ज्यादा से ज्यादा लोग समाचारों के लिए अपने मोबाइल फोन पर निर्भर होते जाएंगे.

प्रिंट मीडिया की खासियत यह है कि अखबार या पत्रिका को आप कहीं भी साथ ले जा सकते हैं, किसी समाचार, लेख या कहानी को कई टुकड़ों में पढ़ सकते हैं, कई-कई बार पढ़ सकते हैं लेकिन यह एकांगी माध्यम है. इसी प्रकार अखबार पढ़ने के लिए आपको पढ़ा लिखा होना जरुरी है.

रेडियो के आविष्कार ने साक्षरता की सीमा को लांघ कर रेडियों को गांवों तक में लोकप्रिय बनाया पर केवल श्रव्य माध्यम होने से यह भी एकांगी ही है. दृश्य और श्रव्य का मेल होने की वजह से टीवी ने समाचारपत्रों और रेडियों, दोनों को पीछे छोड़ दिया. टीवी पर आप घटनाएं लाइव देख सकते है या उन्हें हूबहू घटते हुए देख और सुन सकते हैं, वहीं इंटरनेट उससे भी एक कदम आगे बढ़कर दृश्य, श्रव्य और प्रिंट की त्रिवेणी है, अतः इंटरनेट का प्रसार बढ़ा तो कई बदलाव आयेंगे ही, जिनकी आहट हम आज भी सुन सकते हैं.

हम यह नहीं कहते कि पारंपरिक मीडिया समाप्त हो जाएगा. पारंपरिक मीडिया शायद कभी भी समाप्त न हो. यही नहीं, भविष्य का कोई और आविष्कार लोगों की आदतों में क्या नये परिवर्तन लाएगा, उसका अंदाजा लगाना अभी संभव नहीं है. हो सकता है कि किसी नये आविष्कार के बाद आज का 'नया मीडिया' तब 'पारंपरिक मीडिया' की श्रेणी में आ जाए. तो भी भविष्य की चुनौतियों का सामना करने की तैयारी के मामले में लापरवाही महंगी साबित हो सकती है.

इस सारे विश्लेषण का निष्कर्ष यही है कि पारंपरिक मीडिया के पास अभी वक्त है और मीडिया घरानों को इस समय का सदुपयोग करते हुए नई चुनौतियों का सामना करने की तैयारी कर लेनी चाहिए. समझदारी इसी में हैं कि आनलाइन संस्करण का अलग व्यक्तित्व उभरे, उसके विकास के लिए समग्रता में योजना बने, योजना का सही-सही कार्यान्वयन हो ताकि बाद में अखबार बंद करने या घाटे में बेचने की नौबत न आये.

**पत्रिका के १३वर्ष पूरे होने पर सभी पाठकों को हार्दिक बधाई**

## डॉ० पीताम्बर अवस्थी

**आजीवन सदस्यः** विश्व स्नेह समाज मासिक
**जन्मः** 01.03.1961
**शिक्षाः** एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत, समाज शास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, डी.पी.एड, पी.एच.डी.)
**सामाजिक कार्यः** विभिन्न विद्यालयों के निर्धन व मेधावी छात्रों का चयन कर उनके शिक्षा-दीक्षा का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व का निर्वहन, ३५० छात्र-छात्रओं को निःशुल्क पुस्तकें व शुल्क, नशापान, मांसाहार पर रोक के लिए जनजागरूकता आदि
**सम्मानः** शैलेश मटियानी राज्य शैक्षिक पुरस्कार, पर्यावरण मार्तण्ड, साहित्य सृजन सम्मान, साहित्यवाचस्पति, एन.एम.एफ.आई अवार्ड, साहित्य प्रभा सर्वोच्च ज्ञान माला पुरस्कार, शिक्षा एवं समाज सेवा पुरस्कार, साहित्य वैभव सम्मान, बाल साहित्य सम्मान, समाज सेवा सम्मान, बाल सृजनश्री सम्मान, भारती रत्न मानद उपाधि, राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार, विद्यावाचस्पति, सहित कुल २६ सम्मान/पुरस्कार/उपाधियां
**संपर्कः** मंजरी कुंज, पोस्ट-डिग्री कॉलेज, पिथौरागढ़-२६२५०२, उत्तराखंड, मो०: ६४१०७२५६११

## विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के आगामी परिचर्चा का विषय

1—मंहगाई मूल कारण एवं निवारण

2-भारतीय पुलिस की संवेदनहीनताः कारण एवं निवारण

परिचर्चा हेतु अपने विचार अधिकतम 250 शब्दों में, एक फोटो के साथ क्रम संख्या 01 व 02 के लिए क्रमशः 15 नवम्बर, 15 दिसम्बर 2013 तक मेल करें या भेजें। मेल हिन्दी क्रुति देव फान्ट में ही भेजें. अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा.

# शिक्षा में पर्यटन विधि या भ्रमण विधि

आज की शिक्षा बहुआयामी है. इसके लिए बाहरी ज्ञान जरूरी है. पर्यटन शिक्षा प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन है. यदि हम अपनी पुस्तकीय ज्ञान को सौ फीसदी करना चाहते है तो पर्यटन नितान्त आवश्यक है. पुस्तकों में जो कुछ पढ़ा है या रटाया गया है, उनको साक्षात्कार कर उनमें पूर्णता का अनुभव होता है.

✍डॉ० सीताराम अधिकारी
कौब्रुलैखा,मोटबुङ, मणिपुर

शिक्षा आज बहुधर्मी और बहुआयामी बन गई है. शिक्षा केवल पुस्तकी ज्ञान से अर्जित नहीं की जा सकती. इसके लिए बाहरी ज्ञान का होना जरूरी हो गया है. शिक्षा प्राप्त करना अर्थात सांसारिक ज्ञान प्राप्त करना, खेल खेल में हो सकता है-यह आज की शिक्षा पद्धति का महत्वपूर्ण मन्त्र है.

पर्यटन शिक्षा प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन है. पुस्तकों में प्राप्त जानकारी को ही शिक्षा की सम्पूर्णता मान लेना बड़ी गलती होगी. ऐसे अनेक तथ्य है जिन्हें कक्षा में भाषण या व्याख्यानों के माध्यम से छात्रों को नहीं समझाया जा सकता. यदि छात्रों को उन तथ्यों से प्रत्यक्ष रूप में परिचित कराया जाय तो उनकी जानकारी का प्रतिशत बढ़ेगा. पुस्तकों से प्राप्त जानकारी केवल 50 प्रतिशत ही दिमाग में फिट होती है और उसके प्रत्यक्षीकरण से 30 से 40 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है. अर्थात यह कहा जा सकता है कि हम अपनी पुस्तकी ज्ञान को यदि सौ फीसदी करना चाहते है तो पर्यटन नितान्त आवश्यक होती है.

जीवन की वास्तविकताओं से परिचित होने के लिए और अपनी निरीक्षण शक्ति को विकसित करने के लिए पर्यटन फायदाजनक है. विद्यार्थियों के लिए यह विशेष प्रभावकारी होता है. विद्यालयों में जो ज्ञान पुस्तकों अथवा व्याख्यानों द्वारा नहीं दी जा सकती, वह पर्यटन विधि के माध्यम से दी जा सकती है. विद्यालयों में बच्चों को ऐसे बहुत से विषयों को पढ़ाया जाता है जो मूल रूप में देखे बिना अच्छी तरह नहीं समझ सकते. जब उस विषय को अपनी आंखों से साक्षात्कार करते हैं या सुनते हैं तो उनके विषय के ऊपर जानकारी स्पष्ट हो जाती है. स्कूली बच्चों को आसपास के पार्क, कारखाने, चिड़ियाघर, अजायबघर, संग्रहालय, नदी, पहाड़ आदि का निरीक्षण कराने से उनके ज्ञान की वृद्धि होगी. पुस्तकों में उन्होंने जो कुछ पढ़ा है या रटाया गया है, उनको साक्षात्कार कर उनमें पूर्णता का अनुभव होता है. जब बच्चे साक्षात देखकर किसी विषय की जानकारी लेते है तो वह चिरकाल तक नहीं भूलते. पढ़ी हुई बातें जल्दी भूली जाती है.

ऊंची कक्षा के विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार अलग प्रदेशों में भी ले जाने की आवश्यकता पड़ती है. अपने राज्य से बाहर के व्यापारिक स्थल, योजनाएं, बांध, बन्दरगाह आदि का भ्रमण कराना लाभदायक होगा. इससे वे अपनी कमजोरियों की जानकारी लेंगे. इससे वे देश की उन्नति के विषय में ज्ञान भी हासिल कर लेगें.

गांव और शहर में विद्यार्थियों को पर्यटन के लिए अलग-अलग जगहों का चयन आवश्यक होता है. गांव के विद्यार्थियों के लिए शहर का पर्यटन और शहर के विद्यार्थियों के लिए गांव का भ्रमण लाभकारी होगा. क्योंकि गांव के विद्यार्थियों को यदि खेत, जंगल, नदी, आदि का भ्रमण कराया जाए तो वह उन्हें नया विषय नहीं होगा और वे जानकारी लेने को उत्सुक भी नहीं होंगे. शहर के विद्यार्थियों को व्यवसायिक केन्द्र, बाजार आदि का भ्रमण कराये जो उन्हें यह निरस विषय होगा. पर्यटन कार्यक्रम के लिए निम्न बिन्दुओं की जानकारी आवश्यक होती है.

1—अध्यापक कक्षा में पर्यटन के महत्व के बारे में विद्यार्थियों को समझाएं. यह भी जानकारी दें कि किस उम्र या किस स्तर के विद्यार्थियों के लिए कौन से जगह के भ्रमण से अधिक लाभ होगा. इससे बच्चे पर्यटन के महत्व को जानेंगे और इसके लिए तैयार रहेंगें.

2— पर्यटन भ्रमण के लिए स्थलों का चयन ऐसा हो जिससे अत्यधिक जानकारी प्राप्त हो सके. यदि भ्रमण का स्थान पाठ्यक्रम से सम्बन्धित हो तो और लाभदायक होगा. ऐसे के लिए यदि चिड़ियाघर, संग्रहालयों, कला भवनों आदि में ले जाएं, वे उससे बहुत जानकारी लेंगे और वह उनकी परीक्षा के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा.

3-पर्यटन के लिए आवश्यक सामग्री की सूची पहले ही दे देनी चाहिए ताकि वे उनका बन्दोबस्त कर सकें. कलम, कागज, पानी का बोतल,

**शेष पृष्ठ 14 पर .......**

# सुख समृद्धि व शक्ति का पर्व नवरात्र

✍ देवदत्त शर्मा 'दाधीच'
जयपुर, राजस्थान, मो०9414251739

**या** देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

जो देवी सर्व-भूत प्राणियों में शक्तिरूप होकर निवास करती है, उसको मेरा नमस्कार है. सृष्टि की आदि शक्ति है मां दुर्गा. देवताओं पर मां भगवती की कृपा रहती है. समस्त देव उन्हीं की शक्ति से प्रेरित होकर कार्य करते हैं. यहां तक ब्रह्मा, विष्णु और महेश बिना भगवती की इच्छा या शक्ति से सर्जन, पोषण एवं संहार नहीं करते है. परमेश्वरी के नौ रूप है. इन्हीं की नवरात्रा में पूजा होती है. धामाचार्यो के अनुसार साल भर में चार बार नवरात्र व्रत पूजन का विधान है. इसमें चैत्र व अश्विन प्रमुख मानते हैं. नवरात्र का अर्थ है वह पर्व जो नौ दिन नौ रात का हो. इनका ऋतुओं व प्राकृति से सम्बन्ध है. शक्ति या ऊर्जा के बिना प्राणी निर्जीव है. अतः सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड देवी का प्रतिबिम्ब है. दैवी शक्ति सदैव अन्जमा और अविनाशी है. शक्ति के नौ-स्वरुपों का वर्णन इस प्रकार है ऊँ जयति, मंगला, काली, भद्र-काली, कपालिनी. दुर्गा, क्षमाशिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा नमोऽस्तुते' महामाया भगवती ही आज के संकटग्रस्त लोगों के लिये मन को शानित प्रदान करती है. विभिन्न लोग अपनी अपनी सुविधा अनुसार भगवती की पूजा अर्चना करते है. दुर्गा कवच, अर्गला स्तोत्र, कीलक स्तोत्र, रात्रि सूक्त, दैवी सूक्त, दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र, सिद्ध कुंजिका स्तोत्र, दुर्गा द्वात्रिंशन्माम माला, दैवी सूक्त, दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र आदि. श्री दुर्गा सप्तशती के ग्यारहवें अध्याय में कथा है 'यदा यदा दानवोत्था भविष्यति तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यदिसंक्षयम्' इस प्रकार नौ अवतारों की कथा है. महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, योगमाया, रक्त-दन्तिका, शाकम्भरी, श्री दुर्गा, भ्रामरी व चामुण्डा. नवरात्र में देवी का अनुष्ठान मंगलकारी एवं शक्तिदायक होता है. नवरात्रा के अंतिम दिन कुंवारी कन्याओं का पूजन किया जाता है क्योंकि उन्हें देवी का रूप माना जाता है. नवरात्र में दुर्गा उपासना के लिए हर दिन शुभ होता है और पूजा का विशिष्ट महत्व है. ब्रह्माजी ने सम्पूर्ण प्राणियों के कल्याण हेतु दैवी कवच का विधान बताया है एवं नौ महाशक्तियों के निम्न नाम बताये हैं. प्रथम शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी, तृतीयं चन्द्रघटेति, कूष्माण्डेति, चतुर्थकम पचम स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च. सप्तमं कालरात्रिति, महागौरिति चाऽष्टमम्, नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः. उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना. इसी दिन बगलामुखी साधना करने से धन, मान, सम्मान और आयु बढ़ती है. दुर्गा सप्तसती के पाठ करने से असाध्य रोग दूर होते हैं. भगवान राम व हनुमान जी की आराधना से शत्रु बाधा दूर होती है. कलश स्थापना से सुख-शांति व श्रीदुर्गा नवार्णयंत्रम को भोजपत्र या ताम्रपत्र पर लिखकर पूजन करने से समस्त कामनाये पूरी होती है. नौ दिन तक अखण्ड दीपक ज्योति रखना भी शुभ है व दुर्गा की आराधना से सभी बाधाएं दूर होती है व 'सर्वमंगलमये शिवे सर्वाथे साधिके, शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते' मंत्र का जाप करना चाहिये प्रतिदिन भोग लगावे.

**शैलपुत्री**-पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के रूप में शैलपुत्री मानी जाती है. शैल पुत्री गौरी के अर्थ में भी 'बरों त शम्भु न तो रहौ कुमारी के संकल्प बल की ही विशेषता है. नवरात्रा के प्रथम दिन इसकी पूजा उपासना होती है. योगी अपनी योग साधना करते है. ब्रह्म-जिज्ञासु, सत्यान्वेषी संकल्पक बल. यही बल जीवन में शक्ति प्रदान करता है और जीवन में पूर्ण सफलता मिलती है.

**ब्रह्मचारिणी**- मां दुर्गा का दूसरा रुप. नवरात्र के दूसरे दिन पूजा उपासना की जाती है. ब्रह्माजी द्वारा उत्पन्न सृष्टि का संचालन करने वाली माता. मनुष्य में तप संयम एवं सदाचार की वृद्धि करती है. ज्वालामुखी पहाड़ पर इनका स्थान है.

**चन्द्र घंटा**-नवरात्र के तीसरे दिन इसी नाम की पूजा आराधना की जाती है. यह स्वरूप कल्याणकारी है. इसकी कृपा से पाप एवं बाधाएं दूर की जाती है. चन्द्रमा की किरणों के समान शीतल व सौम्य है. यह कर्नाटक के कान्चीपुरम में स्थित है.

**कुष्मांडा**-नवरात्र के चौथे दिन इसी नाम से पूजा की जाती है. ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने के कारण इसका नाम कुष्मांडा पड़ा. इसकी आराधना से रोग व शोक नष्ट हो जाते है. भीमा पर्वत पर इसका डेरा बताया है. योग वशिष्ठ में लिखा है जो कुछ शरीर में है वही प्रक्रिया पूरे ब्रह्माण्ड में है.

**स्कन्द माता**-इसी नाम से पांचवे

दिन पूजा-अर्चना की जाती है. इसकी कृपा से मूढ़ भी ज्ञानी हो जाता है. कहते है कि इसकी कृपा से ही महाकवि कालिदास की मेघदूत व रघुवंश महाकाव्य पूर्ण हुए. यह चेतना का निर्माण करती है.

**कात्यायनी**-इसी नाम से छठे दिन पूजा आराधना की जाती है. कहते हैं कि देवताओं के कार्य सिद्ध करने के लिए महर्षि कात्यायनी के आश्रम में प्रकट हुई और ऋषि ने उसे कन्या के रूप में माना. इसकी पूजाा से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों की प्राप्ति होती है. यह वैद्यनाथ नामक स्थान पर प्रकट होकर विख्यात हुई.

**कालरात्रि**-इसी नाम से सातवे दिन आराधना की जाती है. अन्धकारमय परिस्थितियों का विनाश करने के कारण कालरात्रि का नाम पड़ा. दुष्टों का विनाश करती है. मनुष्य इसकी कृपा से भय से मुक्त रहता है. इसका स्थान कलकत्ता में बताते हैं. इसे रत्नागिरी भी कहते हैं.

**महागौरी**-यह आठवां रूप है. इसके तीन रूप है-पहला महागौरी, दूसरा राज्य कन्या, तीसरा शैल कन्या. ऐसा कहा जाता है कि मां की शास्त्रीय पद्धति से पूजा करने पर सभी रोगों से मुक्ति मिलती है तथा धन वैभव की प्राप्ति होती है. यह सबकी रक्षा करने वाली है. हरिद्वार कनखल नामक स्थान पर इसका स्थान है.

**सिद्धिदात्री**-नवें दिन सिद्धिदात्री के रूप में पूजा होती है. ये सभी प्रकार की सिद्धियां प्रदान करती हैं. हिमाचल के नन्दा पर्वत पर इनका तीर्थ स्थान है. कठिन से कठिन कार्य इनकी कृपा से चुटकी बजाते ही सिद्ध होते हैं.

इन सभी की पूजा से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है.

नौवों दिन नौ प्रकार से भोग लगाना चाहिए-

☞ प्रथम दिन मां के चरणों में गाय का शुद्ध घी अर्पित करें।

नवरात्रों में जागरण भी किया जाता है. जागरण का अर्थ नींद खराब करना नहीं, बल्कि अपने अन्दर शक्ति का जागरण व अनीति, अत्याचार, कुरीतियों, रूढ़ियों, भ्रष्टाचार, आतंकवाद व अन्य दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष करना व आत्म शक्ति का जागरण करना है.

☞ दूसरे दिन मां के चरणों में शक्कर का भोग लगायें और परिवार के सदस्यों को दें.

☞तीसरे दिन मां के चरणों में दूध या दूध से बनी हुई मिठाई, खीर का भोग का भोग लगाकर ब्राह्मणों को दान दें.

☞चौथे दिन मालपुये भोग लगायें और मंदिर के ब्राह्मण को दान दें.

☞पांचवे दिन केले का नैवेद्य चढ़ाये।

☞छठे दिन शहद का भोग लगावें

☞सातवे दिन गुड़ का नैवेद्य चढ़ाकर ब्राह्मण को दान दें.

☞आठवे दिन नारियल का भोग लगाकर दान करें।

☞नवें दिन तिल का भोग लगाकार ब्राह्मण को दान दें.

नवरात्रों में मां दुर्गा का जागरण भी किया जाता है. जागरण का अर्थ नींद खराब करना नहीं, जागरण का अर्थ है अपने अन्दर शक्ति का जागरण व अनीति, अत्याचार, कुरीतियों, रूढ़ियों, भ्रष्टाचार, आतंकवाद व अन्य दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष करना व आत्म शक्ति का जागरण करना है. नवमी को विविध प्रकार से पूजा-हवन कर नौ कन्याओं को भोजन खिलाना चाहिये और हलवा आदि का प्रसाद वितरण करना चाहिये.

शेष पृष्ठ 12 का...

## शिक्षा में पर्यटन विधि या भ्रमण विधि

मौसम के अनुसार कपड़े, प्राथमिक चिकित्सा के लिए कुछ सामान रहना जरूरी होता है. यदि उपलब्ध हो तो कैमरा और रिकार्डर भी साल लें.

पर्यटन से छात्रों को बहुत जानकारी मिलती है. पहले तो उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन करने का मौका मिलता है. बच्चों की निरीक्षण शक्ति का विकास होता है और इससे ज्ञान सुव्यवस्थित होता है. वे एक दूसरे के अधिक निकट होते हैं और उनमें मिल जुलकर काम करने की उत्सुकता आ जाती है. अध्ययन में किसी कारणवश यदि कोई खामी रह जाती है या किसी विषय का कक्षा में स्पष्टीकरण नहीं होता है, वास्तविक वस्तु देखकर पर्याप्त स्पष्ट हो जाता है.

अतः विद्यार्थियों में पाठ्यक्रम के साथ पर्यटन को भी समावेश करना बहुत फायदाजनक होगा. यदि मासिक रूप में कार्यक्रम बनाया जाय तो विद्यार्थियों को अधिक से अधिक जानकारी पाने में सहायता मिलेगी. शिक्षण संस्थाएं यदि अपने शैक्षिक कार्यक्रम में पर्यटन को एक विषय के रूप में शामिल कर सके तो यह बहुत ही लाभकारी सिद्ध होगा.

# जो दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाता है ख़ुद चंगा हो जाता है

दूसरों की भलाई करने वाला उसी प्रकार से सुखी होता है जैसे दूसरों के हाथों पर मेंहदी लगाने वाले की उँगलियाँ ख़ुद भी मेंहदी के रंग में रंग जाती हैं।

✍सीताराम गुप्ता
ए.डी.-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-३४

कविवर रहीम का प्रसिद्ध दोहा है :

**यों 'रहीम' सुख होत है**
**उपकारी के संग।**
**बाँटनवारे को लगे ज्यों मेंहदी**
**को रंग।।**

दूसरों की भलाई करने वाला उसी प्रकार से सुखी होता है जैसे दूसरों के हाथों पर मेंहदी लगाने वाले की उँगलियाँ ख़ुद भी मेंहदी के रंग में रंग जाती हैं। जो इत्र बेचते हैं वो ख़ुद उसकी बू-बास से महकते रहते हैं। जिस प्रकार से एक फूल बेचने वाले के कपड़ों और बदन से फूलों की सुगंध नहीं जा सकती उसी प्रकार से दूसरों की भलाई करने वाले व्यक्ति का कभी अहित नहीं हो सकता। दूसरों की मदद अथवा परोपकार का निस्संदेह बड़ा महत्त्व है। प्रत्यक्ष रूप से ही नहीं परोक्ष रूप से भी इसका बड़ा महत्त्व है।

एक बुढ़िया थी जो बेहद कमज़ोर और बीमार थी। रहती भी अकेली ही थी। उसके कंधों में दर्द रहता था लेकिन वह इतनी कमज़ोर थी कि ख़ुद अपने हाथों से दवा लगाने में भी असमर्थ थी। कंधों पर दवा लगवाने के लिए कभी किसी से मिन्नतें करती तो कभी किसी से। एक दिन बुढ़िया ने पास से गुज़रने वाले एक युवक से कहा कि बेटा ज़रा मेरे कंधों पर ये दवा मल दे। भगवान तेरा भला करेगा। युवक ने कहा कि अम्मा मेरे हाथों की उँगलियों में तो ख़ुद दर्द रहता है। मैं कैसे तेरे कंधों की मालिश करूँ?

बुढ़िया ने कहा कि बेटा दवा मलने की ज़रूरत नहीं। बस इस डिबिया में से थोड़ी सी मरहम अपनी उँगलियों से निकालकर मेरे कंधों पर फैला दे। युवक ने अनिच्छा से डिबिया में से थोड़ी सी मरहम लेकर अपने एक हाथ की उँगलियों से बुढ़िया के दोनों कंधों पर लगा दी। दवा लगते ही बुढ़िया की बेचैनी कम होने लगी और वो इसके लिए उस युवक को आशीर्वाद देने लगी। बेटा, भगवान तेरी उँगलियों को भी जल्दी ठीक कर दे। बुढ़िया के आशीर्वाद पर युवक अविश्वास से हँस दिया लेकिन साथ ही उसने महसूस किया कि उसकी उँगलियों का दर्द भी ग़ायब सा होता जा रहा है।

वास्तव में बुढ़िया को मरहम लगाने के बाद युवक की उँगलियों पर कुछ मरहम लगी रह गई थी। उसने दूसरे हाथ की उँगलियों से उसे पोंछने की कोशिश की तो मरहम उसके दूसरे हाथ की उँगलियों पर भी लग गई। यह उस मरहम का ही कमाल था जिससे युवक के दोनो हाथों की उँगलियों का दर्द ग़ायब सा होता जा रहा था। अब तो युवक सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक़्त बूढ़ी अम्मा के कंधों पर मरहम लगाता और उसकी सेवा करता। कुछ ही दिनों में बुढ़िया पूरी तरह से ठीक हो गई और साथ ही युवक के दोनो हाथों की उँगलियाँ भी दर्दमुक्त होकर ठीक से काम करने लगीं। तभी तो कहा गया है कि जो दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाता है उसके ख़ुद के ज़ख़्मों को भरने में देर नहीं लगती।

''दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाना'' अब इस मुहावरे को भी देख लीजिए। दूसरे के ज़ख़्मों पर मरहम लगाने का अर्थ है किसी को सांत्वना देना, किसी की पीड़ा को कम करना। ज़रूरी नहीं इसके लिए कोई दवा या मरहम ही लगाई जाए क्योंकि यह पीड़ा भौतिक ही नहीं मानसिक भी हो सकती है। पीड़ा जो भी हो कष्टदायक होती है। यदि कोई किसी को किसी भी प्रकार की पीड़ा से मुक्त करता है तो पीड़ित को बड़ी राहत मिलती है। वह पीड़ा को कम करने वाले या कष्ट को समाप्त करने वाले के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है और आशीर्वाद या दुआएँ देने लगता है।

कृतज्ञता की अवस्था कृतज्ञ को ही नहीं मदद करने वाले को भी अच्छी लगती है। जब कोई उसके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करता है अथवा उसका धन्यवाद करता है या किसी भी अन्य रूप में आभार प्रकट करता है तो वह एकदम विनम्र होकर परमार्थ के भावों

से भर उठता है। उसका मन करता है कि मैं सदैव लोगों के कष्ट दूर करने में लगा रहूँ। दुनिया के सभी लोग कष्टमुक्त हो जाएँ। ऐसी भावावस्था में व्यक्ति के शरीर में स्थित अंतःस्रावी ग्रंथियों से लाभदायक हार्मोंस का उत्सर्जन प्रारंभ हो जाता है जो उसे रोगों से बचाने तथा रोगग्रस्त होने पर शीघ्र रोगमुक्त करने में सहायक होते हैं।

किसी की मदद करने, कोई अच्छा काम करने अथवा निष्काम भाव से कोई समाजोपयोगी कार्य करने से समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढ़ती है और इसके लिए लोग उस व्यक्ति की प्रशंसा भी करते हैं जिससे व्यक्ति को असीम परितुष्टि का अहसास होता है। यही असीम परितुष्टि का अहसास व्यक्ति के शरीर में उपयोगी हार्मोन सेरोटोनिन अर्थात् हैपी हार्मोन के स्तर को बढ़ा देता है जो उसके स्वास्थ्य और रोग-मुक्ति के लिए बेहद उपयोगी होता है। दूसरों की मदद करके भी हम अपने लिए रोग-मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु सुनिश्चित कर सकते हैं इसमें संदेह नहीं।

गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं:

**पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।**
**पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।**
**निर्नय सकल पुरान बेद कर।**
**कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर।।**
**नर सरीर धरि जे पर पीरा।**
**करहिं ते सहहिं महा भव भीरा।।**
**करहिं मोह बस नर अघ नाना।**
**स्वारथ रत परलोक नसाना।।**

अर्थात् दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं और दूसरों को कष्ट देने के समान कोई अधर्म, नीचता अथवा पाप नहीं। यही समस्त पुराणों और वेदों का सार है। विद्वान लोग यह जानते हैं। मनुष्य का शरीर पाकर भी जो लोग दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं उन्हें स्वयं संसार के महान कष्ट भोगने पड़ते हैं। और इस प्रकार स्वार्थ, अज्ञानता अथवा मोहवश होकर जो अनेकानेक पाप कर्मों में लिप्त रहते हैं उनका परलोक भी नष्ट हो जाता है। गोस्वामी जी आगे कहते हैं :

**परहित है जिनके मन माहीं। तिन कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।।**

अर्थात् जिनके मन में परहित अथवा दूसरों की भलाई का जज़्बा बना रहता है उनके लिए संसार की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जो उन्हें न मिल सके। दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाने वाला, सच्चे मन से लोगों की सेवा करने वाला आध्यात्मिक, अधिभौतिक व अधिदैविक तीनों प्रकार की व्याधियों से मुक्त होकर आनन्दपूर्वक जीवन ही नहीं व्यतीत करता वह धर्म का भी सही अर्थों में पालन करता है और स्वस्थ व प्रसन्न रहते हुए यह लोक ही नहीं परलोक भी सँवार लेता है।

# देखो भईया कह देत हों हंसियों मत...

☺ प्रेमी नेता सभा के पश्चात अपनी प्रेमिका पर बरस पड़े-तुमने मुझे इतना लंबा भाषण क्यों लिख कर दिया था? भाषण के बीच कई बार तो बहुत हूटिंग हुई.

प्रेमिका ने माफी मांगते हुए कहा-भाषण ज्यादा नहीं था. हां...इतना गलती मुझसे जरुर हो गई कि मैंने भाषण की चारों कापियां तुम्हें थमा दी थी.

☺ डॉक्टर-आप अपने मन की इच्छाएं दबाएं नहीं, इसी वजह से आपको रात को खराब सपने दिखते हैं.

नेता-मेरे मन मं लगातार इच्छा रहती है कि अपनी मंत्री की कुर्सी रात को अपने बिस्तर के पाए से बांध लूं, लेकिन यह इच्छा मेरे मन में ही रह जाती है.

☺ जज-आप अपनी पति से तलाक क्यों लेना चाहती है?

पत्नी-रात में इसकी नींद खुलती है और वह उठकर बैठ जाते हैं और कहते हैं अब मुझे अपने घर जाना चाहिए.

☺ रानी-तुम्हें लालू और राबड़ी देवी में से किसी एक को वोट देना हो, तो क्या करोगें?

मोहन-मैं लालू को वोट दूंगा, क्योंकि राबड़ी का कहना है कि उनकी जीत में ही मेरी जीत है.

# आवश्यक सूचना

विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति निःशुल्क प्रदान की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें. यह योजना प्रतियों के उपलब्ध रहने तक लागू रहेगी.

## परम्परागत पहचान खोते जा रहे हैं धार्मिक उत्सव

# दशहरा मनाने का औचित्य

**धर्म सिंह ठाकुर**

विश्व गुरु रह चुके भारत के लोग पाश्चात्य संस्कृति में रंगकर भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों को विसराते जा रहे हैं. अतः इन परस्थितियों में भारतीय परम्परायें या तो रूढ़ि मानी जाती है या फिर इन्हें मात्र परम्परा समझकर जैसे-तैसे निपटाया जाता है. इन परम्पराओं को निपटाने में भी पाश्चात्य दृष्टिकोण का ही प्रयोग दृष्टिगोचर हो रहा है. सभी उत्सवों व पर्वो तथा अन्य सभी परम्पराओं में कुछ परिवर्तन भी देखा जाता है तो यह परिवर्तन भारतीय जीवन दर्शन के अनुरूप नहीं बल्कि पाश्चात्य शैली के दृष्टिगत रहता है. इसी कारण सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में मनाये जाने वाले दशहरा उत्सव के सम्बंध में भी कुछ ऐसा ही देखने को मिल रहा है. प्रति वर्ष लोग दशहरा धूम-धाम के साथ मनाते हैं. इसे हम परम्परा के रूप में ही निपटाते हैं. कुल्लू और मैसूर का दशहरा तो विश्व विख्यात है. किन्तु इनकी ख्याति भले ही भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के कारण है फिर भी इन दोनों स्थानों के मनाये जाने वाले भारतीय जीवन पद्धति के अमूल्य उत्सवों को निरन्तर पाश्चात्य जीवन शैली 'खाओ-पीओ' मौज करो के आधार पर विकसित व परिवर्तित किया जा रहा है.

इन उत्सवो को अधिक मनोरंजन युक्त एवं उच्च स्तरीय व्यापारिक मेलों के रूप में विकसित किया जा रहा है. किन्तु भारतीय जीवन मूल्यों के अनुरूप विकसित करना तो दूर बल्कि पुरानी भारतीय जीवन दर्शन और जीवन से जुड़ी परम्पराओं व कलाओं की समाप्ती पर भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है.

> सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में दशहरा को प्रति वर्ष धूम-धाम के साथ मनाते हैं. इस उत्सव को हम 'खाओ-पीओ मौज करो', मनोरंजन एवं व्यापारिक मेलों के आधार पर विकसित व परिवर्तित कर लिए है. इन उत्सवों पर पूर्णतया सरकारी नियन्त्रण हो गया है. मेलों की कमेटियों में सरकार प्रशासन व राजनीतिक लोग ही रहते हैं. समाज को प्रेरणा देने वाले उत्सव-पर्व अब राजनीतिक स्वार्थ के अखाड़े बन गए हैं.

अर्थात इन्हें बचाने के लिए कुछ नहीं किया जा रहा है. ऐसे में दशहरा मनाने का क्या औचित्य? इस प्रश्न का उत्तर सरकार व बुद्धिजीवी एवं प्रबुद्ध वर्ग को देना ही होगा न कि सर्वसाधारण समाज को. क्योंकि समाज उत्थान का दायित्व उक्त लोगों का है. सरकार का इसलिए कि अब सभी बड़े मेलों- उत्सवों की ठेकेदारी सरकार ही बनी हुई है.

अब राष्ट्रीय-अर्न्तराष्ट्रीय मेले व उत्सव सरकारी मेले बन गए हैं. इन मेलों पर सरकार का पूर्ण नियन्त्रण स्थापित हो गया है. इन मेलों को आयोजित करने वाली कमेटियों में सरकार प्रशासन व राजनीतिक लोग ही रहते हैं. जबकि ये कमेटियां शुद्ध रूप से सामाजिक व धार्मिक संस्थानों के प्रतिनिधियों ही होनी चाहिए थी. इन उत्सवों के प्रत्येक कार्यक्रमों का शुभारम्भ राजनीतिक नेता या शासनाध्यक्ष करते हैं, जबकि इन कार्यक्रमों का शुभारम्भ धार्मिक सन्त महात्मा-शंकराचार्यो द्वारा होना चाहिए था. यही कारणा है कि समाज को प्रेरणा देने वाले उत्सव-पर्व अब राजनीतिक स्वार्थ के अखाड़े बन गए हैं. जब यहां राजनीतिक स्वार्थ को ही पूरा करना है तो जीवन मूल्यों से जुड़ी छोटी-छोटी परम्पराओं और कार्यक्रमों की परवाह कोई क्यों करेगा? येनः महाजनः गतः सःपथः. जिस राह से महापुरुष चलते हैं. वही पथ जन सामान्य बिना सोचे-समझे चलते हैं. क्योंकि उन्हें महापुरुष पर भरोसा होता है. यदि हमारे तथाकथित महापुरुष ही इस दिशा पर चलें तो समाज की क्या दशा होगी? यह सहजता से अनुभव किया जा सकता है. कुल्लू का दशहरा अब 'विजया दशमी न रहकर अर्न्तराष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव हो गया है. इस दशहरे के सारे लोक नृत्य अन्तरराष्ट्रीय है. यहां पर कितने अन्तरराष्ट्रीय लोक नृत्य होते हैं यह विश्व जानता है. मुश्किल से एक दो राष्ट्रों के लोक नृत्य यहां देखे जा सकते हैं वे भी कभी-कभी. अनेको बार में यहां कोई एक भी अर्न्तराष्ट्रीय लोक नृत्य नहीं देखा जाता. ऐसे में इस नाम का क्या औचित्य? जबकि विजय दशमी का भाव राष्ट्र की राजनीतिक-नैतिक-सामाजिक विजय से हैं. राम की विजय राष्ट्र की नैतिकता तथा मर्यादा की विजय थी और है.

इसका व्यापक अर्थ करने व जन सामान्य तक पहुंचाने की चिन्ता किसी को नहीं हैं.

यदि इस उत्सव को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मनाना ही था तो इसे अन्तरराष्ट्रीय जीवन दर्शन उत्सव के रूप में मनाना चाहिए था. दुर्भाग्य से राम और राष्ट्र के लिए इन मेलों में नया कुछ नहीं किया जाता. जो प्राचीन परम्परायें हैं उन्हें भी मात्र कर्मकाण्ड की तरह निभा कर महत्व नहीं दिया जाता. अब तो स्थिति यह आ गई है कि दशहरे के आयोजक भी 'खाओ-पीओ मौज करो' के आधार पर ही कार्य करते हैं. इस अवसर पर मौज-मस्ती के अधिकतम अवसर व सुविधायें विशेषकर परिवार-मित्रों को उपलब्ध हों यह आयोजन कमेटी के सदस्यों की प्राथमिकता रहती है. जीवन दर्शन-मर्यादा की बात उनके लिए कोई महत्व नहीं रखती है. इसलिए दशहरा व्यापार मेला बनता जा रहा है. भले ही मेले का व्यापारिक होना बुरी बात नहीं है. किन्तु मूल भावना को भूल कर मात्र व्यापार और मनोरंजन पर बल देना पाश्चात्य दर्शन का ही प्रभाव है. भारतीय जीवन दर्शन तो मनोरंजन में भी संस्कार और कार्यो में मनोरंजन का समावेश सदा बनाये रखने का पक्षधर है. मनोरंजन को भले ही व्यर्थ नहीं कहा जा सकता. किन्तु वर्तमान में संस्कारों की दिशा में तनिक भी ध्यान न देकर मात्र मनोरंजन पर ही ध्यान दिया जाता है. यही कारण है कि आज जन सामान्य के लिए दशहरा मात्र मनोरंजन और घर परिवार के लिए समान खरीदने का अवसर है.

वास्तविकता यह है कि दशहरे में जाकर व्यक्ति खूब मनोरंजन करे तथा व्यापार भी खूब जमकर करें बस लोगों के लिए यही दशहरा बन गया है. किन्तु घर को लौटते हुए वह राम की तरह मर्यादित होकर राष्ट्र के लिए समर्पण का भाव लेकर नहीं जाता. अतः राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा लोगों को कहां से मिलेगी? भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि वीर योद्धा या तो विजय पर्व मनाते थे या फिर राष्ट्र के काम आते थे. ये भावना राष्ट्र में कौन भरेगा? यदि तथाकथित धर्म निरपेक्ष लोग दशहरे पर राम के चरित्र और

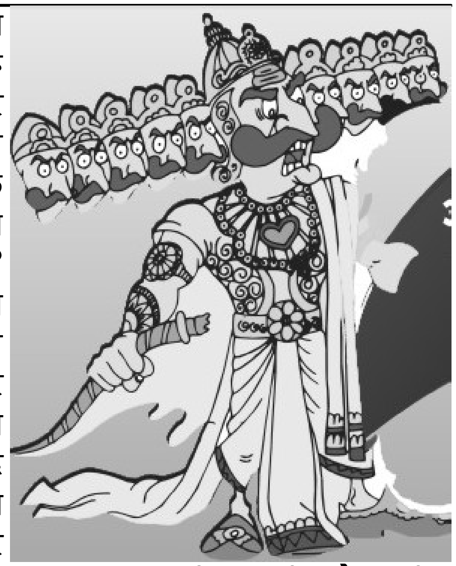

रामायण दर्शन के कार्यक्रमों को साम्प्रदायिक कह अनुचित कहें तो मुझे आश्चर्य न होगा. किन्तु राजनीतिक स्वार्थ के लिए ऐसा कहने और इस सम्बन्ध में कुछ कहने वालों को समझना चाहिए कि वे अनजाने में स्वार्थ के लिए राष्ट्रद्रोह कर रहे हैं. यदि राम और उनकी जीवन पद्धति साम्प्रदायिक थी तो सबसे बड़े साम्प्रदायिक महात्मा गांधी थे, जिन्होंने जीवन भर राम की गाथा गायी और मरते दम भी राम को पुकारा. यह केवल इसलिए कि वे जानते थे कि राम में ही व्यक्ति सहित राष्ट्र का हित समाहित है. इसलिए दशहरा मात्र मनोरंजन पर्व न मानकर इसे राष्ट्रीय प्रेरणा पर्व मानना चाहिए. इस अवसर पर भगवान के दर्शन कर मन में राम की भांति राष्ट्र के लिए नैतिकता-मर्यादा के सम्बन्ध में कुछ न कुछ आदर्श धारण राष्ट्रीय-धार्मिक व नैतिक संकल्प अवश्य करना चाहिए. जिससे स्वयं सहित राष्ट्र को भी लाभ हो. तभी दशहरा मनाने का कोई राष्ट्रीय व व्यक्तिगत लाभ हो सकेगा. अन्यथा दशहरा मनाने का ही कोई औचित्य नहीं है.

## ♥ आज का फंडा ♥

©Tag-Pictures.com

चतुर पुरूष +चतुर स्त्री = रोमांस
चतुर पुरूष +मूर्ख स्त्री = प्रेगनेंसी
मूर्ख पुरूष +चतुर स्त्री = अफेयर
**मूर्ख पुरूष +मूर्ख स्त्री = शादी**
चतुर बॉस + चतुर कर्मचारी = लाभ
चतुर बॉस + मूर्ख कर्मचारी = उत्पादन
मूर्ख बॉस + चतुर कर्मचारी = तरक्की
मूर्ख बॉस + मूर्ख कर्मचारी = ओवरटाइम

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक का आगामी विशेषांक

## रायबरेली के साहित्यकार

दिसम्बर 2013

इस विशेषांक हेतु अपनी रचनाएं, संक्षिप्त सचित्र जीवन परिचय सहित 15 नवम्बर 2013 तक अवश्य भेज देवें। इसके बाद प्राप्त रचनाओं पर विचार करना संभव न होगा.

इस विशेषांक के अतिथि सम्पादक-प्रमोद प्रखर होगें तथा सह अतिथि सम्पादक-श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली' रायबरेली होंगी.

## विश्व स्नेह समाज का अब सदस्यता शुल्क देना बिलकुल आसान

1. अपने आसपास ही विजया बैंक की किसी शाखा में जाए, खातासंख्या 718200300000104 में अपनी सदस्यता राशि जमा करें,
2. एक पोस्टकार्ड पर जमा की तारीख लिखकर भेज दें यां vsnehsamaj@rediffmail.com पर ईमेल करें.

**राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जन–जन की भाषा हिन्दी अपनाएँ भ्रष्टाचार भगाएँ।**

दाऊजी

पत्रिका के प्रकाशन के तेरह वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

# सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ..........................................नकद/धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं. कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक..................................दिनांक...........
बैंक का नाम.............................................................
2. धनादेश क्रमांक....................................दिनांक...........

हस्ताक्षर

नाम :.................................................................
पता :.................................................................
.......................................................................................................
.....पिन कोड...........
दूरभाष/मो0..........................ईमेलः.............................

विशेष नियमः

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा.

| सदस्यता प्रकार | शुल्क(भारत में) | शुल्क (विदेशों में) |
|---|---|---|
| एक प्रति : | रु0 10/– | $ 1.00/ |
| वार्षिक | रु0 110/– | $ 5.00/ |
| पाँच वर्ष : | रु0 500/– | $ 150/ |
| आजीवन सदस्यः | रु0 1100/– | $ 350/ |
| संरक्षक सदस्यः | रु0 5000/– | $ 1500/ |

**विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)**

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

## भारत

**कं**धों के भार में सत्व है भारत।
बाहरों से विनिमय तत्व है भारत।
मुर्दों में जीवन तत्व है भारत।
जो युग युग से अमृत है भारत।
एक लक्ष्य के भिन्न भिन्न पथ है भारत।
पनाह पाते जहां आश्रित हैं भारत।
जिसके कण कण में देवत्व है भारत।
त्याग, सेवा का व्रत है भारत
मेरा देश अनंत पवित्र है भारत।

## बिन प्यार की तलाश

**भा**व नहीं था अभाव ही
बन गयी जब दीवार,
तलाशना ही बेकार है,
जहां नहीं दिल की पुकार।

## अनचाही यादें

**दो** जिस्म का एक होना क्या
होता है कहो प्यार,
तुम्हें गंवा कर दिल में लाने क्या
नफरत होगी यार?

## आवाज और खामोशी

बढ़ती आवाज घटा देती है
दिल की हलचल,
खामोशी पाकर बाकई दुनिया,
उठती है मचल।

## अपने में ही आनंद

औरों से तुम यारी करो
पाओ नतीजा जहर,
अपने में जब हो मशगुल
पाओ आनंद अपार।।

## मुखौटा

रंगीन मुंह से मिलता मधु
देखो जिधर चारों ओर
चुंबन चखो जीवन तजो
उसके भीतर जहर।

## दिल और दिमाग

बातें दिमाग की
कयामत का तूफान।
दिल का मुहब्बत अपनालो
बैकुंठ समान।।

-**हरिहर चौधरी,** गंजाम, उड़ीसा

## मौत का अहसास

**मैं,** हर पल
अपने सामने खड़ी देखता हूं उसे,
बिलकुल समीप, बहुत ही करीब
देखने में मेरी तरह, पर अजीब
एक दिन/मैंने उससे पूछा,
क्यों करती हो मेरा पीछा,
वह हंसी/मैं नहीं करती तेरा पीछा
मैं तो तेरे साथ चल रही हूं।
जब से तू जन्मा है
तभी से हूं तेरे साथ
और रहूंगी तब तक
जब तक तू मेरे भीतर न समा जाता।
पचास वर्ष सात महीने और तेइस दिन
उस रात में अकेला था
मुझे लगा कोई नहीं आसपास
मैं डरा, सहमा, और
नींद की गोलियां खा ली
मुझे याद है रात के दो बजे थे
घड़ी की टिक टिक सुनाई दे रही थी
और मैं दर्द से कराह रहा था।
वह मुस्करा रही थी
मुझे और करीब बुला रही थी।
मेरे सामने उसका
आकार बढ़ता गया और मैं
उसमें समाता गया।
फिर एक पल में
मैं उसमें विलीन हो गया
फिर तो न मैं था
और न वह थी।।

-**डॉ० अकेलाभाइ,** शिलांग

# तीन का महत्व

**पिता, माता, गुरू**
का सदा आदर करें।
**भोजन, भजन, व्यायाम** -
नियम से करो।
**स्त्री, धन, संपत्ति**-सदा दूर रहो।
**झूठ, चोरी, निंदा**- से डरो
**उपकार, परोपकार, भक्ति**
-इन तीनों को मत भूलो।
**शराब, धूम्रपान, जुआ खेलने**
-से सदा दूर रहो
**दया, ममता, प्यार**-
सबको देते रहो

**-डी.के.लिंगराज,**
शिकारीपुर, कर्नाटक

# मानव इस तरह रहना

**देखना** -गीदड़ की तरह
**रखवाली करना**- कुत्ते की तरह
**गर्जन करना**- सिंह की तरह
**चलना**-हाथी की तरह
**सोचना**-चाणक्य की तरह
**खाना**-तोते के जैसे
**गाना**-कोयल के जैसे
**नृत्य**- मयूर के जैसे
**सोना**- कुत्ते के जैसे
**जोड़ना**- चींटी की तरह
**दान करना**- कर्ण के जैसे
**भक्ति** -हनुमान के जैसे
**वचन पालन**-राम के जैसे
**अहिंसा**- बुद्ध के जैसे
**डरना**- समाज से
**सहनशक्ति**-पृथ्वी के जैसे
**पालन करना**- मां के जैसे
**जिम्मेदारी**- बाप के जैसे

**-जे.वी. नागरत्नमा,**
शिमोगा, कर्नाटक

# जो तुम कहो

समेट कर
सारा व्योम
चक्षुओं में भर,
धरा को समेट
हथेलियों में धर,
शुद्ध हवा
श्वासों में भर,
पल भर
बनूं वो
जो तुम चाहो।
पक्षियों से ले कर
रंग बिरंगे पर
जड़ लूं स्वयं पर
हौले-हौले
मुक्त हो
दुनियावी बन्धनों से
तन का चोला तज
उड़ान भरूँ
पल भर
पहुंचुं जहां
तुम हो।
बादलों से लेकर
स्वच्छ नीर
अंजुलियों में भर-भर
धोऊँ मैले हृदय
विषैले विचार
विकार कर लूं हर
थकूं न रूकूं
उम्रभर
करूं वो
जो तुम कहो।

**-प्रोमिला भारद्वाज,**
मण्डी, हिमाचल प्रदेश

# फूल

फूलों को भी
फूलों से स्नेह हुआ करता है।
एक डाल पर
लेकिन/मरु के बिना बहे
न मिलपाते हैं।
वैसे भी एक डाल पर
साथ साथ में/मुश्किल से ही
खिल पाते हैं।
लेकिन सहसा
कोई पड़ोसी झड़ जाता है,
लेकर वही समाधि
स्वयं ही गढ़ जाता है।
तब दूजा/इतना उदास
कि जैसे वीरानों में
अबोध हों/अथवा किसी
इकलौती मां की
क्षण में खाली/हुई गोद हो।
ऐसा ही कुछ
रह जाता है
न जाने एकाकीपन को
कैसे खुद ही
सह जाता है।
मानव अपने
ऐसे क्षण में
खान पान सब
बिसरा देता
और सुखा कर
अपने तन को
मन की पीड़ा दर्शाता है।
चेहरे पर
मायूसी लाकर
अथवा गीत
दर्द के गाकर।
लेकिन फूल
कि जिसका साथी
बिछुड़ गया हो।
उसी डाल पर
जिसकी जड़ में
पानी खाद।
सभी कुछ होता
झर जाता है
मर जाता है
साथी के खुद
घर जाता है।
और
बसंत में
लाकर उसको
फिर
डाली पर
मुस्काता है।

**-हरिचरण वारिज,** भोपाल, म.प्र.

# दिल की पुकार

कौन किसका पिता जगत में,
कौन किसी की माई।
मतलब का संसार जगत में,
कौन किस का भाई।।
मोह ममता में फंस कर
दुनिया भारी कष्ट उठाती।
घर संतान नहीं होने से
'बाबाओ' के घर जाती।।
हाथ जोड़कर करे खुशामहद,
चाहे हो कोई जाति।
संतान सुख पाने को,
सभी उपाय अपनाती।
इच्छा पूरी होने पर,
फूले नहीं समाते।
मन्दिर, मस्जिद जाकर,
अपना शीश झुकाते।।
यो ही समय,/बीतता जाता।
समय अपनी गति से
धीरे-धीरे चलता जाता।।
बूढ़े हुए मात-पिता एक दिन,
समय ने पलटा खाया।
बेटा और बहू ने एक दिन,
घर से बाहर कराया।।
फिर भी दुआ निकलती दिल से,
खुश रहो आबाद रहो।
जहां भी रहो प्यारे बच्चो,
जीवन भर खुशहाल रहो।।

**-मोहित कुमार गोस्वामी,**
मो०: 7499293868

## भगवान दास जैन

आदमी जब भी लबो लहज़ा बदलता है।
रंग कितनें देखना चेहरा बदलता है।
चढ़ती-ढ़लती धूप में रिश्ता बदलता है,
जैसे क़द इन्सान का साया बदलता है।
इस सदी के आदमी-सा है फ़लक तू भी,
देखकर मौसम का रुख़ हुलिया बदलता है।
हों भलेही राह में पुरज़ोर चट्टानें,
राह अपनी कब भला दरिया बदलता है।
आदमी दोनों हैं हम तो खुल के मिल ऐ दोस्त,
दरमियां हर बार क्यूं पर्दा बदलता है।
इस क़दर मग़रूर होना नामुनासिब है,
क़ुदरतन तूफ़ान का झोंका बदलता है।
जो ख़ुदा से भी ज़ियादा ख़ुद पे हो नाज़ां,
बस वही तक़दीर का नक़्शा बदलता है।
दाग़ चेहरे के नहीं मिट पाएंगें यूं तो,
दोस्त नाहक क्यूं तू आईना बदलता है।
—मणीनगर (पूर्व), अहमदाबाद, गुजरात

## सरदार पंछी

जाने यह बीज क्या बनें रह कर ज़मीन में।
हमने तो अश्क बो दिये बंजर ज़मीन में।
वो सख़्त हो के हो गये पत्थर ज़मीन में,
गाड़े गये थे काट कर जो सर ज़मीन में।
जब फ़स्ल बन के निकले तो काटोगे किस तरह,
तुम रोज़ बो रहे हो जो ख़ंजर ज़मीन में।
सय्याद ने हवा में जो फेंका था, नोच कर,
झण्डे की तरह गड़ गया वो पर ज़मीन में।
सूरज की बद दुआ से बचे गा वो किस तरह,
जिसने भी घर बना लिया डर कर ज़मीन में।
यह ज़िन्दगी-ओ-मौत का चक्कर अजीब है,
'अकबर' ज़मीन पर है तो 'बाबर' ज़मीन में।

2

गुज़ारी ज़िन्दगानी हमने तीखी धार के नीचे।
कभी इक़रार के नीचे कभी इन्कार के नीचे।
चमकता है, दमकता है, झलकता है, छलकता है,
यह तिल है या सितारा है तेरे रुख़सार के नीचे।
हज़ारों साल पहले कितनी ख़ुश थी कितनी नाज़ां थी,
वो पहली ईंट जो रखी गयी दीवार के नीचे।
मुसव्विर क्या बताये उसकी ग़ुरबत ही बतायेगी,
लिखा जायेगा किसका नाम इस शहकार के नीचे।
हज़ारों हाथ पाओं कर गये चढ़ने की कोशिश में,
अजब हैं सीढ़ियां हाकिम तेरे दरबार के नीचे।
अज़ल से जल रहा है ता क़्यामत बुझ नहीं सकता,
रहे बेशक दिया अपना हवा की मार के नीचे।
कभी उड़ना हवाओं में कभी चलना ख़लाओं में,
ज़मीं ठहरे भी तो कैसे किसी फ़नकार के नीचे।
पिसे जाते हैं जिसमें हम सभी कोहलू यह किसका है,
कटोरा किसका रखा है लहू की धार के नीचे।
ज़रूरत आ पड़ी जब भी तो पंछी ने दिये बोसे,
कभी तलवार के ऊपर कभी तलवार के नीचे।
—लुधियना, पंजाब


## आवश्यकता है

हिन्दी साप्ताहिक **का बा चर्चा**
हेतु विभिन्न शहरों में संवाददाताओं, विज्ञापन प्रतिनिधियों, शहर/तहसील/जिला व राज्य स्तर पर ब्यूरो प्रमुख की.
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।
10 रीवा बिल्डिंग, लीडर रोड इलाहाबाद-211001
मोबाईलः 9935396715, 9335155949

## क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

**विशेष आकर्षण**

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें
**प्रसार सचिव**
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011
bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com

# तुलसी

-मोहन तिवारी 'आनन्द'
संपादक-कर्मनिष्ठा, भोपाल, म.प्र.

राधा का विवाह हुआ तब तुलसी माँ के पेट में थी। विवाह के तीन माह बाद वह इस दुनियाँ में आई थी. वह क्या जाने कि उसके जन्म के पूर्व उसकी दीदी के बने पति, कभी उसका सुहाग बनेगें?

तुलसी अभी तेरह वर्ष की नादान बच्ची थी, किन्तु उसकी माँ ने कहा, '' बेटी तेरी दीदी इस दुनियाँ को छोड़कर चली गई है। तेरे जीजा जी का घर उजड़ गया है। वे बहुत अच्छे हैं मैं चाहती हूँ कि तू उनकी गिरस्ती सम्हाल ले?''

तुलसी, अभी तक न तो घर जानती थी और न गिरस्ती. वह यह भी नहीं जान पाई थी, कि माँ उससे क्या कहना चाहती है. उसने मुस्कुराकर कहा, ''हाँ अम्मा मैं कल ही जीजा जी के साथ जाकर उनका घर सम्हाल लूँगी.''

भोली भाली तुलसी, की इस अनजान टिप्पणी को माँ ने उसकी वैवाहिक स्वीकृति मान ली. मुहूरत निकलवाकर उसके हाथ पीले कर दिए.

तेरह साल की तुलसी अपने पच्चीस वर्षीय पति के साथ जब अपनी ससुराल पहुँची तो वह अपने पति को जीजा जी ही कहती थी. उसकी सास ने समझाते हुए कहा, ''बेटा ये अब तेरे जीजा जी नहीं, पति हैं. तुम लोगों के सामने इनसे बात नहीं किया करो. अब तुम शादी सुदा हो. तुम्हें मर्यादा का पालन करना होगा. अब तुम नन्नू की साली नहीं पत्नी हो.''

तुलसी सासू जी की बात सुनकर चुपचाप अपने कमरे में चली गई.

शाम ढल चुकी थी. नन्नू भैंस का दूध दुहकर घर में लेकर आए. उन्होने आवाज लगाई, ''माँ ये दूध रख लो.''

माँ घर में नही थी. नन्नू ने फिर आवाज देकर कहा, ''कोई है? ये दूध उठालो, बिल्ली पी लेगी.'' एक लम्बा घूंघट डाले तुलसी कमरे से बाहर आई और दूध का वर्तन उठाकर कमरे के भीतर जाने लगी, तभी नन्नू ने कहा, ''अरे आज तो बड़ी स्यानी हो गई हो दुलहनियाँ! बडी खूबसूरत लग रही हो.''

> राधा क्या जाने कि उसके जन्म के पूर्व उसकी दीदी के बने पति, कभी उसका सुहाग बनेगें? तेरह वर्ष की नादान बच्ची को उसकी माँ ने कहा, '' बेटी तेरी दीदी इस दुनियाँ को छोड़कर चली गई है. तेरे जीजा जी का घर उजड़ गया है. मैं चाहती हूँ कि तू उनकी गिरस्ती सम्हाल ले?''

तुलसी चुपचाप कमरे में चली गई. तुलसी में आए यकायक इस परिवर्तन को नन्नू समझ भी नहीं पा रहे थे कि सुबह तक बुलबुल सी चहकने वाली नन्ही तुलसी में इकदम ये परिवर्तन कैसे आ गया. रात का भोजन कर नन्नू जब अपने कमरे में गया तो उसने तुलसी को लम्बे घूँघट में सिमटी हुई देख कहा, ''तुलसी क्या बात है, आज तो ...?''

पर वह चुपचाप थी. नन्नू ने घूँघट उठाते हुए कहा, ''क्यों मुझसे परदा कर रही हो? मैं तो तुम्हारा...''

''नहीं, अब तुम मेरे जीजा जी नही, वो हो, माँ कह रही थी तुम मेरे सुहाग हो, परमेश्वर हो, मुझे तुमसे.''

माँ की सीख को वेद वाक्य मानकर पूरे उन्सठ वर्ष तक, नन्नू को अपना परमेश्वर मानने वाली तुलसी ने, अस्पताल में दम तोड़ते हुए नन्नू से कहा, ''सुनो मैं जा रही हूँ अपना ख़्याल रखना, अब खाने पीने में नखरे मत करना, जो मिल जाय चुपचाप खा लिया करो, हाँ दूध पीते रहना. अगर कोई गरम न करे तो खुद कर लेना. अब पानी देने कोई नहीं पहुँचेगा खेत पर. अपने साथ कसेंड़ी या दबकी में पानी ले जाया करना. मैं भी दीदी की तरह तुम्हें छोड़कर तो जा रही हूँ किन्तु अकेला नहीं. अब तुम्हारे साथ भरा पूरा परिवार है. बेटे, बहुएँ नात पंती, सब हैं. इतना ध्यान जरूर रखना, तुम इन सबके तो हो, पर, इनमें से तुम्हारा कौन होगा ये तुम्हें समय आने पर मालूम होगा. ये जी, सुनो, तुम मुझे एक भजन सुना दो, बहुत दिनों से तुमने गाकर नहीं सुनाया.''

नन्नू ने आँखों से आँसू टपकाते हुए गीत के बोल गुनगुनाए, तुलसी ने कहा, ''कंजूसी मत करो, जरा धुन में''

''अबे के गए कब मिल हो रे!
कब मिल हो, बतादो मेरे मीत रे!
अबे के गए अरे हो?''

नन्हें की लम्बीतान सुन अस्पताल के लोग बड़ी उत्सुकता से निहारने लगे और तुलसी ने विदा ले ली. वाहों में तुलसी को लिए नन्नू ने कहा, ''तुम भी चलदी, अब इस बुढ़ापे में किसका.?''

'मुझे याद है दीदी ने अपनी अन्तिम सांस लेते वक्त मुझसे कहा था, तुलसी तेरे जीजा जी बहुत भले आदमी है. तेरह वर्ष मैं इनके साथ रही किन्तु मुझे ऐसे लगता है कि अभी कल की बात हो. शायद अब मेरे इनकी सेवा के दिन पूरे हो गए है, तू मेरी छोटी बहिन जरूर है किन्तु है मुझसे बहुत छोटी मै

तुझसे एक वचन मांगती हूँ।''

''बोलो न दीदी मुझे क्या आज्ञा है?''

''तुलसी तू इनका ख्याल रखना, अगर ये दुखी रहे तो मेरी आत्मा को चैन नही मिल पायेगा।''

दीदी की अन्तिम इच्छा की पूर्ति में तुलसी ने अपना सारा जीवन दिए की बाती की भांति जिया, खुद ने जलकर नन्हे के जीवन को प्रकाशमान किया. वह इस दुनियाँ से विदा ले गई है, पति को हिदायत भरी सीख देकर

नन्नू के बेटा बेटी बहुएँ सब उनका बहुत ख्याल रखते है. खाना पीना समय पर देना उनकी हर इच्छा का पालन करना अपना फर्ज मानते थे. परिवार एक सूत्र में बंधा हुआ चल रहा था. इस दुनियाँ से विदा लिए तुलसी को १५ वर्ष हो गए थे. तुलसी की पुण्य तिथि हो या कोई त्यौहार तुलसी की याद में नन्हे भजन गाते गाते अश्रुपूरित हुए बिना नहीं रहते थे. अच्छी तरह से चलते फिरते थे. कभी इस बेटे के साथ तो कभी उसके रहकर सुखमय जीवन जी रहे थे.

चन्दन और मेंहदी की भाँति तुलसी ने अपना सम्पूर्ण जीवन पति एवं बच्चों के लिए जिया. उसने उन्हें वह सब कुछ दिया जो एक आदर्श गृहणी दे सकती थी. तुलसी का जीवन त्याग एवं समर्पण से भरा था. उसकी पंद्रहवी पुण्यतिथि के अवसर पर, नर्मदा कह रही थी, ''तुलसी कोई सामान्य नारी नहीं थी, उसने अपने जीवन चरित्र में जो आयाम स्थापित किये थे, उसकी तुलना अगर राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी तारावती से की जाय तो भी कम होगी. एक गरीब किसान की पत्नि होकर भी उसने धर्म परायणता एवं कर्तव्य निष्ठा से अपने आपको विमुख नहीं होने दिया. मुझे वे दिन याद आते हैं जब नन्नू को एक रात अज्ञात लोगों ने लाठियों से पीटकर मरा समझ झाड़ियों में फेंक दिया था. छोटे छोटे बच्चे तथा बिस्तर में पति होने पर भी तुलसी ने हिम्मत नही हारी. लगातार आठ माह तक नन्नू को अस्पताल में भरती रखकर उसने इलाज कराया था.''

एक नजदीकी रिस्तेदार ने जब उससे कहा, ''क्यों बेकार पैसा बर्बाद कर रही है, अब नन्नू की आशा छोड़ बच्चों का पालन कर.''

''जब तक मैं जीवित हूँ इन्हें कुछ नहीं हो सकता. मैं अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक इनकी सेवा करूँगी. इन्हीं की गोद में अन्तिम सांस लूँगी. धन दौलत, जमीन जायदाद गाय बैल भैंस जितने हैं, मै आज बेचकर इनका इलाज करा रही हूँ ठीक होकर ये सब खरीद लेंगे. मैं अपने इन छोटे छोटे बच्चों के सिर से उनके पिता का साया उठ जाने दूँ? भाई साहब आपको इस तरह की सलाह देने के पूर्व जरा सोचना चाहिए.''

''तुलसी के आत्म विश्वास के सामने स्वयं दैव को भी सोचने को मजबूर होना पड़ गया. ठीक एवं स्वस्थ्य होकर नन्हे ने पूरे इकतालीस वर्ष ऐसे जिये मानों उन्हें कुछ हुआ ही नहीं था''

''नन्नू के पास धन, दौलत, मकान बेटे बहुएँ नाती पोते, तथा समाज में ऊँचा दर्जा जो भी है वह सब उसी तुलसी की मेंहनत, लगन तथा कर्तव्य निष्ठा का फल है. मैं ने उसे नजदीक से देखा है, उसके आत्मबल एवं आत्मविश्वास को देखा है.''

कहते कहते नर्मदा की आंखों नम हो आई. नन्नू के परिवार के पास आज सब कुछ है. भरा पूरा परिवार, सम्पन्नता, समाज में ऊंचा दर्जा, और तुलसी की मधुर स्मृतियॉ। उसके बेटे नन्हे की पुण्यतिथि पर धार्मिक आयोजन करते हैं, हवन पूजन, ब्राह्मण भोज करते हैं किन्तु उन्हें तुलसी का पुण्य स्मरण नहीं आता. तुलसी के सजाये आंगन में तुलसी की विस्मृति कहती है, ''कि शायद पुरूष प्रधान समाज में नारी को मात्र उपभोग की वस्तु ही माना जाता रहेगा.''

''मैंने तुलसी की याद में अपने आंगन में तुलसी का विरवा रोपा है.'

नन्नू के बेटा बेटी बहुएँ सब उनका बहुत ख्याल रखते है. खाना पीना समय पर देना उनकी हर इच्छा का पालन करना अपना फर्ज मानते थे. परिवार एक सूत्र में बंधा हुआ चल रहा था. इस दुनियाँ से विदा लिए तुलसी को १५ वर्ष हो गए थे. तुलसी का जीवन त्याग एवं समर्पण से भरा था.

खूबसूरत तस्वीरें निगेटिव से तैयार होती है और वो भी अंधेरे कमरे में, इसलिए जब भी आपके जीवन में अंधकार नजर आए, तो समझ लीजिए कि ईश्वर आपके भविष्य कि सुंदर सी तस्वीर का निर्माण कर रहा है.

दाउजी

# जीवन के उस पार

✍डॉ०अरुण कुमार आनंद
गणेश कॉलोनी, गली नं० २, बृजनगर, निकट गणेश मंदिर, सीता रोड, चन्दौसी-२०२४१२, सम्भल, उ.प्र.

**भाग-०५**

**प्र**त्येक मनुष्य का यही जीवन चक्र है मृत्युलोक का? कोई आ रहा है और कोई आयु पूर्ण कर जा रहा है. कुछ ऐसे भी हैं जो अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं. वे इसी मृत्युलोक में भूत-पिचास के रूप में भटकते रहते हैं. अब से पहले जो गये मानव शरीर छोड़कर क्या वे सभी आत्मायें परमात्मा और दिव्य लोक को प्राप्त हो गये? ऐसा नहीं है. दिव्य लोक की प्राप्ति बहुत ही दुर्लभ और कठिन है. इसके लिए संसार का त्याग और प्रभु समर्पण आवश्यक है. परिवारिक भौतिक संसार में रहकर यह कदापि संभव नहीं है. ऐसा व्यक्ति केवल कर्मयोगी कहलाता है. क्योंकि वह सांसारिक माया मोह लोभ और अहं से विरक्त नहीं होता. प्रत्येक मनुष्य जीवन के अन्तिम पायदान पर पहुंचने के बाद सोचता है उसने जीवन में क्या पाया, क्या खोया? उपलब्धियां तो बहुत संग्रह कर लिया, परिवार लम्बा चौड़ा बना लिया. अपार धन-सम्पत्ति संग्रह कर लिया, फिर भी खाली हाथ है. उसका अपना कुछ नहीं है. जो संग्रह किया उसमें से एक रत्ति भी मृत्यु बाद उसके साथ जाने वाला नही है. यह सब बेअर्थ है? क्या इसीलिये आया था, मनुष्य योनि में? मृत्यु बाद कोई इन उपलब्धियों का कृति रचनाओं-स्मारकों का प्रयोग करेगा या रद्दी में कबाड़ी की दुकान में डाल देगा? महल चौबारे जो उसने बनवाये एक दिन सब खण्डहर बन कर इतिहास बन जायेंगे? तो फिर किस काम की यह संग्रह उपलब्धियां? यह सब सोचकर आत्मा कांप जाती है. शास्त्रों में कहा गया है मानव जन्म दुर्लभ है, मनुष्यों ने बेअर्थ ही इस दुलर्भ जन्म को गवां दिया. दान पुण्य सदकर्म नहीं किया? तो मृत्योपरान्त क्या पायेगा? यही सब कुछ होता रहा जीवन भर. ना जाने ऐसे कितने ही प्रतिभाएं होगी मृत्युलोक में जीवन भर संघर्ष करने के बाद भी उन्हें राही मुकाम नहीं मिला, परमात्मा का सानिध्य नहीं मिला. उन्हें भी इस भौतिक संसार को छोड़कर अकेले ही अनन्तमार्ग की यात्रा करनी पड़ी यह तो मृत्युलोक का नियम है. इससे श्रीराम श्री कृष्ण संत महात्मा भी अछूते नहीं रहे. संसार से विदा होकर जाने के बाद कुछ दिन तक यादें रह जाती है, तत्पश्चात कौन किसे याद करता है? यही प्रकृति की नियति है, वक्त गुजारने के साथ-साथ सब भूलते चले जाते हैं. यह वह मार्ग है जहां से गुजर जाने के बाद कोई वापस नहीं लौटता है. हम जब भी इस गीत को सुनते हैं, हृदय में टीस सा उठने लगता है. गीतकार ने सही कहा है-

यह जिन्दगी के मेले दुनिया में कम न होगें।
क्या वक्त क्या जमाना एक दिन है सबको जाना।
फूल खिलते रहेगें गुलशन,
अफशोश की हम न होंगें?

इस विरलता ने हमें लिखने को विवस कर दिया. क्या यही अन्तिम पड़ाव है जिन्दगी का? उसके बाद? कई प्रश्न सामने आकर खड़े हो जाते है. जिनका उत्तर किसी के पास नहीं है.' जाने-अनजाने जीवन के उस पार जाने का विषाद प्रत्येक मनुष्य को जीवन के अन्तिम पायदान पर ग्रास्ता रहता है. मृत्युपरान्त के उस पार के जीवन के बारे में कोई निश्चित ज्ञान न होने के कारण मनुष्य व्याकुलता के कगार पर भटकता रहता है. मन बारंम्बार अकुलाता है. प्रश्न मस्तिष्क पर कौंधने लगते हैं-क्या है जीवन के उस पार? कैसी होगी वहां की व्यवस्था? कौन होंगे वहां के साथी? वहां कोई अपना सगा-सम्बंधी नहीं है. पारिवारिक रिश्ते-नाते सब समाप्त हो जाते हैं. बेटा बाप को नहीं पहचानता. पत्नि-पति को नहीं पहचानती सभी कुटुम्बजन, जो पहले जा चुके हैं, सुक्ष्म देह धारी आत्मा रूप में है. मानव योनि की स्मृतियां-यादें सब नष्ट हो चुकी होगी. ऐसे विचार मन को मंथते रहते है. 'कौन है तू' जो स्वयं को पहचान नहीं पाता? प्रभू से फरियाद करता रहता है, मोक्ष प्राप्ति की? मगर मोक्ष कहां है? ऐसा कर्म ही नहीं किया मनुष्य जन्म में, तो मोक्ष की प्राप्ति कैसे संभव है? प्रभु सानिध्य की प्राप्ति भी सम्भव नहीं है. जो बुजुर्ग बाबा-दादा अब तक गये उनसे मिलाप तो होता है, किंतु वे सिर्फ एक आत्मा के रूप में पहचानते हैं.

**क्रमशः**

# आलोक चतुर्वेदी विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा सम्मानित

इलाहाबाद. साहित्य के बिना सामाजिक परिवेश की उल्लेखनीय प्रगति बहुत मुश्किल है. जो लोग या समाज का जो वर्ग साहित्य के क्षेत्र में लेखन से लेकर प्रकाशन तक एक साहित्यध र्मी की तरह कार्य कर रहे हैं उन्हें प्रतिष्ठित और सम्मानित करना व्यवस्था का कर्त्तव्य बनता है.उक्त विचार विज्ञान परिषद के प्रधानमंत्री डॉ० शिवगोपाल मिश्र ने विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा साहित्य संगम प्रकाशन एवं साहित्य संगम वैचारिकी पत्रिका के प्रधान संपादक आलोक चतुर्वेदी को संस्था द्वारा उनको हिन्दी सेवा के लिए आयोजित एक साहित्यिक समारोह में विज्ञान परिषद के सभागार में व्यक्त किये.

उन्होंने कहा कि संस्था साहित्य के क्षेत्र में अपनी उपादेयता की वजह से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखती है और उसके द्वारा सम्मानित किया जाना व्यक्ति विशेष का ही नहीं उस वंश एवं परिवेश का भी सम्मान है जहां वह रहता है.

समारोह के प्रारम्भ में संस्था के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आलोक चतुर्वेदी के कृतित्व पर अपने उद्गार व्यक्त किये कि चतुर्वेदी को सम्मानित करते हुए संस्थान को खुशी हो रही है. यह सम्मान १०वें साहित्य मेला के अवसर पर दिया जाना था परन्तु अपरिहार्य कारणों वश उस समय श्री चतुर्वेदी जी सम्मान ग्रहण न कर सकें. सम्मान में माला शॉल, सम्मान-पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गया.

इस अवसर पर अपने सम्मान के प्रति साभार व्यक्त करते हुए आलोक चतुर्वेदी ने कहा कि वे बिना किसी आकांक्षा और अनुराग के अपने परिवार की साहित्यिक विरासत को बढ़ाने हेतु दृढ़ संकल्पित है और जीवनक्रम के इस प्रयास में किसी तरह का परितोषित एवं सम्मान उन्हें कार्य के प्रति समर्पित होने के लिए एक नई ऊर्जा से प्रफुल्लित करता है.

समारोह में उपस्थित विद्वतजनों में डॉ. दिनेश मणि, श्री अनिल श्रीवास्तव, प्रबोध मानस, बलराम यादव आदि सहित अनेक लोगों ने आलोक चतुर्वेदी का माल्यार्पण और अपने उद्‌बोधन से स्वागत किया. समारोह में सर्वश्री ओंकार स्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. आर.के.पाठक , डॉ. गिरीश पाण्डेय, प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी, डॉ० ओ.पी.श्रीवास्तव, डॉ० अर्चना पाण्डेय, डॉ. रमेश पाण्डेय, अर्पणा चतुर्वेदी, अरविन्द चतुर्वेदी आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे. समारोह का संचालन देवब्रत द्विवेदी एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ० संतोष जैन ने किया.

# गृहलक्ष्मी की पूर्व संपादक सुनीता नाइक अभावों के चलते गुरूद्वारे में

देश की ख्यातिलब्ध परिवारिक पत्रिका रही गृहलक्ष्मी की पूर्व संपादक सुनीता नाइक को अभावों के चलते मुम्बई के एक गुरूद्वारे की शरण लेनी पड़ी कैसी स्थिति है? क्या यही है हमारे देश का हाल? एक तरफ केन्द्र सबको भोजन के लिए अधिकार कानून पास कर चुका है दूसरी तरफ समाज को दिशा देने वाली संपादिका अभावों में? क्या हिन्दी सेवियों के लिए कोई कानून नहीं है? कोई अधिकार नहीं है. क्या कर रहे हैं हमारे देश के हितैशी जन नेता, क्या होगा इस देश का कभी आपने सोचा. हिन्दी के नाम पर लाखों/करोड़ों रुपये का सरकारी फंड लेने वाली संस्थाएं क्या कर रही है? क्या उनके पास ऐसे कार्यो के लिए फंड नहीं है? जगह नहीं है जहां सुनीता नाइक को ठहरा सके, भोजन पानी की व्यवस्था कर सकें. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद इसके लिए आगे कदम बढ़ाने को तत्पर होकर सुनीता नाईक से सम्पर्क करने का प्रयास कर रहा है. उन्हें यथा सम्भव जो भी सहयोग होगा किया जाएगा।

# स्वाईन फ्लू

-डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा
ग्वालियर, म.प्र.

स्वाईन फ्लू एक प्रकार का इन्फ्लूएन्जा है जो सुअरों में होने वाले इन्फ्लूएंजा वायरस के प्रकार से होता है. अब होने वाली स्वाईन फ्लू इन्फ्लूएंजा वायरस के दो और स्ट्रेन, स्वाईन इन्फ्लूएन्जा वायरस के एक स्ट्रेन के मिले-जुले रूप का परिणाम है. चूंकि इन्फ्लूएंजा वायरस अपना रूप बदलता रहता है. इसलिए रोगी का बचाव पहिले इन्फ्लूएन्जा या उसके लिए दिए गए टीके से नहीं हो पाता है.

इस रोग में इन्फ्लूएन्जा जैसे लक्षण दिखते हैं. ठण्ड लगना, बुखार आना, खराब गला, मांस पेशियों में दर्द, सिर दर्द, खांसी, कमजोरी, तबियत ठीक न लगना लक्षण है.

डब्ल्यू.एच.ओ ने स्वाईन फ्लू का नया नामकरण 'इन्फ्लूएन्जा ए हिनी फ्लू' किया है.

रोग से बचाव मुख्य बात है. इसके तीन मुख्य भाग है, सुअरों में रोग का रोकना, उनसे मानव में रोग के जाने को रोकना, मानवों में रोग के फैलने को रोकना.

यदि बच्चों में रोग के लक्षण दिखते हैं तो जब तक बच्चा २४ घंण्टे से अधिक बिना बुखार के रहे तब तक स्कूल नहीं भेजना चाहिए. बच्चों में उल्टी व दस्त भी होते हैं.

एन्टीवायरल दवाएं काम करती है दो मुख्य हैं-

पहला आसेल्टामिविसर (टैमिफ्लू), दूसरा जै़नामिविर (रिलेन्ज़ा). ओसेल्टामिविर मुंह के रास्ते देते हैं व ज़ैनामिविर इन्हेंलर जैसे के देते हैं. फेफड़े के रोगियों को ज़ैनामिविर नहीं देते हैं.

इस रोग का अभी टीका नहीं बना है. शोध कार्यजारी है. बचाव में हाथ का धोना, मास्क लगाना शामिल है. रोग से डरने की जगह लड़ने की आवश्यकता है.

## फोन अनलॉक होने पर भी लॉक रहेंगे मैसेज

मोबाइल फोन में आपके व्यक्तिगत मैसेज, फोटो या वीडियो होते हैं, जिनको आप हर किसी के साथ शेयर करना पसंद नहीं करते हैं. लेकिन मोबाइल फोन से डिलीट भी नहीं करना चाहते हैं. अगर ऐसे में मोबाइल फोन किसी दूसरे के हाथ में चला जाए तो मन में यही बात रहती है कि कहीं कोई मैसेज न पढ़ लें. प्राईवेट फोटो और वीडियों न देख लें. इसलिए शायद आप मोबाइल में सेंटर लॉक भी डालकर रखते होंगें. लेकिन तब क्या जब आपको खुद से मोबाइल दूसरे को देना पड़ जाए?

वल्ट एप्लिकेशन ऐसी स्थिति में ही आपकी मदद करती है. यह वास्तव में आपकी प्राइवेसी की बनाए रखनें में काफी मददगार है. इसकी सहायता से आप मोबाइल में प्राइवेट स्पेस बना सकते हैं, जहां पर आप प्राइवेट फोटो, वीडियों या मैसेज या कॉल लाग को सुरक्षित कर सकते हैं. आप यहां १०० मैसेज तक सुरक्षित सकते हैं, जो दूसरों की नजर से हमेशा बचे रहेंगें. वल्ट के द्वारा बने इसे स्पेस को आप लॉक करके रख सकते हैं. पासवार्ड क्या होगा यह आप एप्लिकेशन की शुरूआत में ही तय करेंगें. वल्ट का डाटा पूरी तरह से सुरक्षित होगा, जिसको सिर्फ आप ही एक्सेस कर सकते हैं.

## आवश्यकता है

1996 से निरन्तर प्रकाशित विश्व स्नेह समाज मासिक को देश के विभिन्न शहरों में

- ब्यूरो प्रमुख,
- विज्ञापन प्रतिनिधियों

की जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

प्रबंध सम्पादक
विश्व स्नेह समाज (मासिक)
एल.आई.जी-93, नीम सराय
कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.
कानाफूसीः 9335155959
ईमेलः
vsnehsamaj@rediffmail.com

# सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-**कैलाश गौतम सम्मान**-(हास्य/व्यंग्य रचना), 02-**डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), 03—**हिंदी सेवी सम्मान**- (विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), 04-**राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). 05-**राष्ट्रभाषा सम्मान** -(अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) 06-**कला/संस्कृति सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), 07-**बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना, 08- **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) 09-**राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), 10-**पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**-(पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए), 11-**सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) 12-**प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) 13-**युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 14-काव्यश्री 15-कहानीश्री, 16-ग़ज़लश्री, 17-दोहाश्री, 18-**विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), 19-**डॉक्टरश्री** (डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए)20-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए)21-**सैनिक श्री** (सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी सेवा के लिए),22-**विज्ञान श्री** (विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है) 23-**प्रशासक सम्मान/प्रशासकश्री** (कुशल प्रशासन अथवा किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए) 24-**विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब के लिए,

**उपाधियां** उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में:** साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में:** समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में:** पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

विशेष:१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्या: 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी 2014 से लागू होगी. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार

के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्‌जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

**अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१३**

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-


सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**

एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.

मो०: ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com


## सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद

विषयः ..........................सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि संदर्भः

महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले..................................................सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ..............................................................पिता/पति का नामः...............................................

पताः......................................................................................................................................................

.............................................................................................................................................................

दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................

रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः.................................................विधा....................वर्ष.........................

प्रेषित प्रतियाँ.............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................

संख्या........................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

भवदीय/भवदीया

हस्ताक्षर....................................

पूरा नाम....................................

**सलंग्नक**

०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक

०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

## 'अपनी कलम' हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

**काव्य खंड** के लिए के लिए 10 गीत/10ग़ज़ल/10 नई कविताएं/100दोहे **गद्य खण्ड** के लिए 5 लेख/5 संस्मरण **कहानी खंड** के लिए 5 कहानियां/10 लघु कथाएं

प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को 15 पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व 1500/रुपये **30 अक्टूबर 2013** तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता **सं०:एस.बी. 538702010009259** में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करेंः

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011

ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

# दीपक की लौ की दिव्य शक्तियों को वही जान पाता है जो लौ के साथ समाहित हो जाता है

श्रद्धेयश्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी
हार्दिक अभिवन्दनम्

संभवत आप स्वस्थ एवं सानन्द ही होंगे? आपके निरंतर सुख-समृद्धि और चिरायू की श्री प्रभुजी से याचना-प्रार्थना करते हैं. आप आयू में हमसे छोटे है या बड़े यह तो मैं नहीं जानता. किन्तु योग्यता, अनुभव, व्यक्तित्व और कृतित्व से निश्चित ही आप महान हैं. आपकी साहित्य सेवा, समाज सेवा की उपलब्धियों का ज्ञान हमें नहीं था. इसलिए आपके ऊपर जून-२०१३ के लिए अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त नहीं कर सके. इसके लिए अत्यंत ग्लानि और खेद हैं. ऐसा महानतम व्यक्तित्व न जाने कैसे हमारी दृष्टि से बचा रहा, साहित्य जगत के लिए दुर्भाग्य का विषय ही है. जून-२०१३ के आपके स्मृति विशेषांक से प्राप्त उपलब्धियों से हमें इतनी प्रेरणा और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है कि उसका शब्दों में वर्णन कर पाना संभव ही नहीं है. दीपक की लौ की दैविय दिव्य शक्तियों को वही जान पाता है जो लौके साथ समाहित हो जाता है, साहित्यकारों की यह मूल पहचान है. उन्हीं में से एक दिव्य की लौ आप है, जो जनसेवा, अध्यात्म और साहित्य ज्योति से संसार को चन्द्रमा की भांति प्रकाशोत्हाशित और शीतलता प्रदान करना चाहता है. ऐसा व्यक्तित्व कोटि-कोटिश दण्डवत प्रणाम का पात्र होता है. संभवतः यह भौतिक अवसरवादी संसार आपको और हमें पहचान सके? इसमें शंका निश्चित है. किन्तु दरिया किसी से मार्ग नहीं मांगते अपना मार्ग स्वयं तलाश कर लेते हैं. जो स्वयं सूर्य है उन्हें किसी दीपक की रोशनी की आवश्यकता नहीं होती? विश्व स्नेह समाज पत्रिका इसका साक्षात प्रमाण है. यहां हम आपके लेख, सम्पादकीय का वर्णन नहीं करेगें क्योंकि आईने को अपना प्रतिबिम्ब देखने के लिए किसी दूसरे आईने की जरूरत नहीं होती. ऐसा है गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी का व्यक्तित्व और कृतित्व. इसका आभास हमें विशेषांक की मोती समान रचनाओं और सामग्रियों से लगा? जिसमें 'मृत्यु के बाद' रचना एक अलग ही आभा और संदेश छोड़ जाती है कि गोकुलेश्वर के बाद उनकी कृतित्व और उपलब्धियों का क्या होगा? यह प्रश्न लगभग सभी लेखकों को जीवन भर शालता रहता है. जिस प्रकार मृत्योपरान्त अनंतमार्ग की यात्रा का कोई विकल्प नहीं है. उसी प्रकार लेखक साहित्यकारों के प्रकाशित एवम अप्रकाशित कृतियों का भी कोई विकल्प एवं अस्तित्व नहीं रह जाता है? आज मुंशी प्रेमचन्द्र, अज्ञेय, रविन्द्रनाथ टैगोर, दिवाकर मिश्र और फणिश्वर रेणू को कितने लोग पढ़ते और याद करते हैं? इनके स्मारक स्मृतियां देश में कहीं नहीं है, तो फिर साहित्य, कृति-वृत्तियां जीवित कैसे रहेगी? इस पर सभी वर्तमान साहित्यकारों को विचार करने की जरूरत है. केवल व्यक्तित्व कृतित्व उपलब्धियों की रचनाएं छप जाने मात्र से कोई मृत्योपरान्त अमर नहीं हो जाता. इसके लिए आगे भी साहित्यकारों को कुछ सोचने और करने की जरुरत है.

हमने इस बार श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदीजी और विश्व स्नेह समाज की प्रतिक्रियाओं में कुछ अधिक ही लिख दिया है. यह शब्द व वाक्यों का अर्थ निरर्थक नहीं है. इसमें गहराई से चिंतन मनन करने की जरूरत है. हमे बेअर्थ किसी की झूठी प्रशंसा करने या लिखने की आदत नहीं है. क्योंकि किसी को सूर्य की सहारे की जरूरत नहीं होती है. जिस लेखक साहित्यकार को कलम में ओज और रचनाओं में दम होता है वह स्वतः ही संसार में प्रकाशमान हो जाता है. ऐसा ही हमें श्री द्विवेदी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व में लगता है. प्रभु उनके उपलब्धियों को जगत में सूर्य की भांति और चमकाय हमारी उनके प्रति यही शुभकामना है.

**-डॉ० अरूण कुमार आनन्द**
सेवा. आई.ए.एस., गणेश कॉलोनी, गली नं० २, बृजनगर, निकट गणेश मंदिर, सीता रोड, चन्दौसी-२०२४१२, सम्भल, उ.प्र.

---

परम आदरणीय भाई द्विवेदी जी     सादर अभिवादन

कुशलता ही कुशलता की द्योतक है. विश्व स्नेह समाज का सितम्बर अंक आज ही प्राप्त हुआ. पढ़कर आनंदतिरेक हुआ कि हिन्दी भाषा के मर्मज्ञ भाषा की सलामती हेतु प्रयासरत है. आपकी कर्मठता के लिए कोटि कोटि साधुवाद.

**गंगा शरण शर्मा 'व्यास'** दत्ता सदन, पापावाली गली, गोपालपुरा, मुरैना, म.प्र.

**प्रिय** डॉ० द्विवेदी जी,

पत्रिका का जून अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका का अवलोकन करने के पश्चात आपके पूर्ण व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई. मन प्रसन्नता से भर गया.-**डॉ० ओमप्रकाश हयारण 'दर्द'**, ग्वालियर रोड, झांसी, उ.प्र.

# रचना तिवारी की कृति निवाला क्यों नहीं मिलता का लोकार्पण

## -विभिन्न क्षेत्रों की पांच विभूतियों को दुर्रानी पुरस्कार

**राबर्ट्सगंज,** सोनभद्र. सरदार बल्लभ भाई पटेल स्मृति जन चेतना एवं सेवा संस्थान के तत्वावधान मे सोन की बेटी कवयित्री रचना तिवारी की कृति 'निवाला क्यों नहीं मिलता' का लोकार्पण जाने माने ख्यातिलब्ध साहित्यकारों, पत्रकारों, समाजसेवियों, प्रशासनिक अधिकारियों के सारस्वत कुम्भ में किया गया.

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि एसडीएम मिर्जापुर विश्राम सिंह यादव ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर समारोह को गति प्रदान की। अपने सम्बोधन मे श्री यादव ने कहा कि यह अवसर सोनवासियों के गर्व करने का है। रचना तिवारी की रचना मे मुझे संवेदना की पूरी शक्ति और मानवता की महक मिलती है।' अध्यक्षता कर रहे बार एसोसियेशन के अध्यक्ष अरूण कुमार पाण्डेय ने कहा 'उम्मीद से कहीं बेहतर काव्य संग्रह मिला। रचनाकार की सोच और कृति की प्रासंगिकता समाज के लिए दर्पण साबित होगा.'

समारोह के दौरान आगंतुको की मांग और आग्रह पर उत्कृष्ट काव्य पेश कर लोगो के बीच अपनी प्रतिभा और चिंतन का लोहा मनवाया.'

समारोह के दौरान साहित्य सेवा के क्षेत्र में ओम प्रकाश त्रिपाठी, शायरी में एमए शफक, संगीत में रवीन्द्र नाथ पाण्डेय, नशा निषेध में अखिलेश पाण्डेय, पत्रकारिता में कमाल अहमद, समाजसेवा में वरिष्ठ समाज सेविका शान्ता भट्टाचार्य को अंगवस्त्रम, प्रतीक एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर संस्था द्वारा सम्मानित किया गया। इसी क्रम में कवयित्री रचना तिवारी के पिता स्व. वेद व्यास देव पाण्डेय के स्मृति में जनपद के प्रख्यात चिकित्सक व समाजसेवी डा. अमरनाथ देव पाण्डेय को वेद व्यास देव पाण्डेय स्मृति सम्मान-२०१३ से सम्मानित किया गया। फिल्म निर्माता एवं निर्देशक इकबाल दुर्रानी सम्मान पहली बार जनपद के वरिष्ठ पत्रकार मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी को दिया गया। सनोज कुमार तिवारी, डा. शिवाजी, इं. जीतेन्द्र पासवान, धीरज पाण्डेय धीरू, देवेन्द्र कुमार गुप्त, शत्रुंजय मिश्रा, विनोद जायसवाल, विशिष्ट कुमार चौबे को संस्था अध्यक्ष रचना तिवारी और संस्था सचिव राजेश द्विवेदी द्वारा युवाओ को युवा अलंकरण सम्मान से सम्मानित किया गया। बतौर विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ कवि कमलेश राजहंस, जलपुरूष रमेश सिंह यादव, मत्स्य निदेशक अरविन्द मिश्रा, भिखारी, बाबा, आदि ने पुस्तक की प्रासंगिकता प्रकाश डालते हुए इस तरह के आयोजनो पर बल दिया। इस अवसर पर समारोह का संचालन मिथिलेश द्विवेदी ने किया और आभार संस्था के सचिव राजेश द्विवेदी ने एवं आगंतुको का मार्मिक धन्यवाद कवयित्री रचना तिवारी ने किया।

**यह देश का दुर्भाग्य है कि आज भी इण्डियन भारतीयों पर राज्य कर रहे हैं.**

रामकृष्ण गर्ग, इलाहाबाद

# मिथिलेश द्विवेदी को इकबाल दुर्रानी सम्मान

सोनभद्र, (ब्यूरो)। सरदार बल्लभ भाई पटेल स्मृति जनचेतना एवं सेवा संस्थान के बैनर तले कवियत्री व गीतकार रचना तिवारी की ओर से इकबाल दुर्रानी सम्मान २०१३ से सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी को प्रदान किया गया. सम्मानित होने के बाद श्री द्विवेदी ने कहा है 'भले ही यह सम्मान मुझे दिया गया है किन्तु इसके योग्य मैं नही हूं। उन्होनें इसे सोनांचल की साहित्यिक धारा एवं उत्कृष्ट व संघर्षशील पत्रकारिता करने के जजबा का सम्मान कहा. इसे मैं सोनांचल के युवाओं का समर्पित करता हूं।' एक बैठक में श्री द्विवेदी ने आयोजक मण्डल एवं साहित्य व पत्रकारिता से जुड़े लोगो के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुये रचनाधर्मिता, साहित्यसेवा एवं पत्रकारिता के प्रति युवाओं को प्रेरित भी किया। बताते चले कि सोंनाचल सहित प्रदेश व देश की कई संस्थाओं ने भी श्री द्विवेदी को पूर्व में सम्मानित किया है। मीडिया फोरम ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष को इकबाल दुर्रानी सम्मान से नवाजे जाने पर साहित्य-कारों, पत्रकारो व समाजसेवियों ने हर्ष व्यक्त करते हुये पं० पारसनाथ मिश्र, कमलेश राजहंस, ब्रम्हचारी दूबे, राजनारायण पाण्डेय, चन्द्रकांत शर्मा, विजय शंकर चतुर्वेदी, दीपक केसरवानी, विजय विनीत, सुनील तिवारी, शिवदास प्रजापति, चन्द्रमणि शुक्ला, अखिलेश कुमार पाण्डेय, डा० एके गुप्ता, सनोज कुमार तिवारी, मुकेश सिंह, अरविंद कुमार पाण्डेय, नन्दकिशोर, विकास वर्मा, विवेक पाण्डेय, असीम चौधरी, आरपी उपाध्याय, कमाल अहमद, संतोष कुमार नागर, अजय भाटिया, रमेश सिंह यादव, ज्यूतनारायण पटेल आदि ने उन्हें बधाई दी. पत्रिका परिवार की तरफ से भी हार्दिक बधाई.

# रामकृष्ण गर्ग कार्य० अध्यक्ष एवं सोशन एलिजाबेथ उपाध्यक्ष चयनित

इलाहाबाद. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के प्रबंध समिति की एक अति आवश्यक बैठक संस्थान के जनसंपर्क कार्यालय, ६५ए/२, रामचन्द्र मिशन रोड, चक मुण्डेरा, इलाहाबाद में सम्पन्न हुई. बैठक की अध्यक्षता संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा ने की. बैठक में वर्तमान अध्यक्ष और कार्यकारी अध्यक्ष (वरिष्ठ उपाध्यक्ष) के संस्थान की गतिविधियों में सक्रिय न होने के कारण ५ दिसम्बर २०१४ तक के लिए इलाहाबाद के वरिष्ठ समाज सेवी व चिन्तक श्री रामकृष्ण गर्ग को संस्थान का कार्यकारी अध्यक्ष व अंध विद्यालय की संचालिका डॉ. सोशन एलिजाबेथ को उपाध्यक्ष सर्वसम्मति से चयनित किया गया. वर्तमान कार्यकारी अध्यक्ष(उपाध्यक्ष) डॉ० श्रीमती तारा सिंह को गत कई वर्षो से बैठकों में सम्मिलित न होने, संस्थान की गतिविधियों में कोई रुचि न रखने के कारण तत्काल प्रभाव से हटा दिया गया है। वह अब मात्र आजीवन सदस्य के रूप में ही संस्थान से जुड़ी रहेगी तथा उनके अधिकारों व कर्त्तव्यों के प्रति जवाब देही होगी. बैठक के बारे में जानकारी देते हुए संस्थान के प्रबंध सचिव ईश्वर शरण शुक्ल ने बताया कि सभी पदाधिकारी व सदस्य जिनकी सदस्यता समाप्त हो गई है वे सदस्यता शुल्क जमा कर अपना नवीनीकरण करवा लेवें. अन्यथा अगले वर्ष चुनाव में मत देने के अधिकारी नहीं होगें. चुनाव हेतु चुनाव अधिकारी का चयन व मतदाता सूची सभी मताधिकार रखने वाले सदस्यों/पदाधिकारियों को जून २०१४ तक प्रेषित कर दी जाएगी तथा चुनाव सम्बंधी अन्य कार्यवाही, चुनाव तिथि, नामांकन आदि की घोषणा नवनियुक्त चुनाव अधिकारी द्वारा सितम्बर २०१४ में की जाएगी। बैठक में रामकृष्ण गर्ग, डॉ० सोसन एलिजाबेथ, गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, श्रीमती जया शुक्ला, राजकिशोर भारती, महेन्द्र अग्रवाल, मो० अन्सार शिल्पी, मिथिलेश द्विवेदी आदि उपस्थित रहे।

# अपना अपना वजूद

**सां**झ ढलते ही डीबले और बाती में अपने-अपने वजूद को लेकर बहस शुरू हो गई. तभी डीबले ने बाती से कहा-'देखले बाती, मेरे बिना तेरा कोई वजूद नहीं है.'

डीबले की यह बात सुनकर, बाती से भी नहीं रहा गया. वह भी अकड़ कर बोली-'मूर्ख डीबले, अगर मैं तेरे साथ नहीं होती तो तूँ ठोकरे खाता फिरता. मेरे कारण ही तेरा वजूद है. वरना डीबले का डीबला रहता.''

बेचारा तेल उन दोनों में चल रही बहस को चुपचाप सुन रहा था. जब वे दोनों अपनी हदें पार करने लगे तो तेल ने उन्हें चुप कराते हुए कहा-''माना तुम दोनों का अपना-अपना वजूद है. अगर मेरा वजूद तुम्हारे साथ नहीं मिलता तो तुम दोनों को कौन पूछता? हम तीनों के वजूद से ही दीपक बनता है. देखो! वह मानव तम को भगााने के लिए हमें जलाने आ रहा है. अब हम तीनों का वजूद दीपक बनकर तम को दूर करेगा और जग को रोशन.''

दीपक जलते ही फिर उन तीनों का वजूद मुस्करा उठा था.

# भीड़

**भी**ड़ भरे चौराहे पर एक गरीब व्यक्ति चिल्लाया-'वह चोर मेरी सारी जमा पूँजी को छीनकर भाग रहा है.'

उसी पल चौराहे के दूसरे छोर से एक अमीर व्यक्ति चिल्लाया-'पकड़ो-पकड़ो, उस कुत्ते को पकड़ो, जो मेरी गाड़ी से निकलकर भाग रहा है. मैं उसे पचास हजार रुपये में अभी खरीद कर लाया हूँ.'

चौराहे की भीड़ ने एक बार गरीब व्यक्ति की तरफ देखा और फिर अमीर व्यक्ति की तरफ. अगले ही पल भीड़ कुत्ते को पकड़ने के लिए दौड़ पड़ी थी.

# धूल भरा स्वार्थ

**वि**धानसभा चुनाओं की गर्मी अपने यौवन पर थी. अपने मतदाताओं को लुभाने के लिए हर पार्टी के उम्मीदवार गाँव-गाँव, गली-गली और खेत-खलिहान मारे-मारे फिर रहे थे. इस जन-सम्पर्क अभियान में सत्तारुढ़ पार्टी के उम्मीदवार दिलावर सिंह अपने विपक्षी उम्मीदवारों से बहुत आगे चल रहे थे.

एक दोपहर दिलावर सिंह थका-हारा, जब अपनी कोठी पर पहुँचा तो उनके थकान भरे चेहरे को देखकर उसकी पत्नी ने पूछा-'कितना कठिन काम है, चुनाव लड़ना? कहाँ-कहाँ धूल फांकनी पड़ रही है? ऊपर से गर्मी का यह मौसम तो तन को झुलसाता रहता है. देखो, तुम्हारा चेहरा भी टमाटर की तरह लाल हो रहा है. मैं तुम्हारे लिए ठंडा पानी लेकर आती हूँ.''

अपनी पत्नी की बात सुनकर दिलावर सिंह के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान थिरक आई. अपनी पत्नी को पास बिठाते हुए उन्होंने बड़े प्यार से कहा-''अरे भाग्यवान! मैं तो अपने मतदाताओं के पीछे सिर्फ दो महीने से ही धूल फाँक रहा हूँ. उन बेचारों की भी हिम्मत देखना, मेरे जीतने के बाद पाँच साल तक वे मेरे पीछे धूल फाँकते फिरेंगे और मैं उनको समय ही नहीं दे पाऊँगा. आधी बार तो उनको गेट में ही नहीं घुसने दिया जायेगा. फिर भी वे मेरे पीछे धूल फाँकते रहेंगे. कुछ समझ में आई बात.''

वह अपने पति के धूल भरे स्वार्थ को समझ गई और सहमति से अपना सिर हिला दिया था.

📖 **रोहित यादव,**
मंडी अटेली, हरियाणा

# वो पगली

अमृतसर पिंगलवाड़े दान के लिये जाने का मौका मिला मुझे. मैं करीब 4:00 बजे वहाँ पहुँची. कार्यालय की औपचारिकता पूर्ण कर मैं बाहर वाले बरामदे की ओर बढ़ी कि मेरी नज़रों में नज़रे डालकर बड़ी दयनीय स्थिति में वो हँसी व बोली, 'किसे छोड़ने आए हो, अब और कौन मरेगा यहाँ?' मैं हतप्रभ सी फटी आँखों से उसे देखने लगी व कहा, 'क्यों तुम पूछ रही हो, क्या तुम्हारे घर से कोई आने वाला है?' वह ज़ोर से हँसी व फिर यकायक गम्भीर होकर बोली, 'मैं पागल हूँ, वर्मा मुझे पागल, बीमार कहकर यहाँ छोड़ गया था सिर्फ दूसरी शादी कराने के लिये. ये देखो उसकी चिट्ठी, जो उसने मुझे शादी के बाद लिखी थी और ये मेरे बेटे व बेटी की तस्वीर, वो क्यों आएँगे, मैं पागल जो हूँ.'' इतना कहकर भरी आँखों से वह तेज़ी से पीछे की तरफ भाग गई मुझे शून्य में छोड़कर.

📖 **शबनम शर्मा,**
सिरमौर, हिमाचल प्रदेश

# मनमौजी के मौज के दस्तावेज

ईश्वर ने अपनी प्रकृति के अनुसार ही मनुष्य के मस्तिष्क में भी प्रवृत्ति पोषित कर दी है. मनुष्य पहले रचना करता है, फिर प्रदर्शन. आजकल ऐसी ही प्रक्रिया से गुजर रहे हैं विधिश्री पवन चौधरी 'मनमौजी'. 'अज्ञेय और मनमौजी के मधुर संवाद' पुस्तक के पृष्ठ ६०-६१ पर प्रकाशित सूची के अनुसार मनमौजी ने छोटी-बड़ी अनेकों रचनाओं को रचा है. यत्र-तत्र बिखरे इस साहित्य को अब इन्होंने 'एक वकील साहित्यकार की डायरी' के रूप में पांच खण्डों मुझे उपलब्ध कराये गये के अनुसार प्रकाशित करवा दिया है.

इन पुस्तकों के प्रकाशन गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने 'प्रकाशक की कलम से' में यह घोषणा की है कि यह श्रृंखला अलग-अलग विधाओं में समाहित करके १६ खण्डों में प्रकाशित होगी जो 'एक जन्नत' पर विराम करेगी. 'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद' द्वारा प्रकाशित इन पुस्तकों के हर खण्ड की अलग-अलग पहचान दर्शाकर समीक्षक के दायित्व का भी निर्वहन किया है. जिससे पाठक को इन कृतियों में गहरे तक जाने का मार्ग सुगम हो गया है. इसके कारण लेखक की साधना को सराहना मिलने में सुगमता आ जायेगी. इन संग्रहों को अवलोकन करने के बाद यह कहा जा सकता है कि मनमौजी ने कुछ भी छिपाया नहीं है, अपितु श्रृंगारिक कर प्रस्तुत किया है.

अवकाश प्राप्त न्यायाधीश जसपाल सिंह ने इन पुस्तकों के फ्लैप में कहा है' पवन चौधरी सोचता बहुत है.' मैं इसमें एक पंक्ति और जोड़ रहा हूं चौधारी बोलता भी खूब है.' किसी की सूनता कम है, अपितु अपनी कहता बहुत है. इसका आभास इन संग्रहों में भी दृष्टिगोचर है.

इन पुस्तकों से यह आभास होता है कि मनमौजी ने वकालत केवल परिवार के भरण-पोषण की आवश्यकता तक ही की है और शेष समय का उपयोग कानून और कचहरियों पर दिल खोलकर लिखने में किया है. कई बार तो लगता है कि लेखन को सीमा विहीन बनाए रखा है. दो संस्मरणों 'मेरे गीत तेरे मीत' तथा 'तेरे गीत मेरे मीत' में लगता है कि इसमें साहित्यकारों की मनमौजी ने केवल मौज ही देखी है, स्तर नापने का उपक्रम नहीं किया है. मनमौजी ने जिन स्थितियों में भोगा है, उतनी ईमानदारी से पाठकों को परोस दिया है. प्रस्तुति में तो वह सफल रहे, परन्तु शायद परख में नहीं.

अपनी आत्माभिव्यक्ति में स्वयं लेखक का मानना है कि 'मैंने सदैव विषय, भाषा और प्रस्तुतिकरण ही को महत्व दिया है.' इन संस्मरणों में से सरसरी तौर पर गुजरने से ज्ञात होता है कि मनमौजी को जो मिल वह वैसा ही पाठकों को परोस दिया.

श्रृंखला के तीसरे खण्ड 'हरियाणा हिन्दी साहित्यः एक विहंगम दृष्टिपात' में हिन्दी साहित्य एवं पुस्तक समीक्षाएं समाहित है. निबन्धों के इस पुष्प-गुच्छ में जहां साहित्य के फूलों के विषय में उनके रंग, प्रकृति, प्रवृत्ति आदि के बारे में खुले मन से लिखा गया है, वहीं प्लास्टिक-पुष्प और सुगंधित पुष्पों के रखवाले कांटों का भी चरित्र चित्रण किया गया है.

कई स्थानों पर तो ऐसा आभास होता है कि 'पुष्पों के रक्षक समर्पित कांटो की चुभन स्वयं लेखक को भी मिली है. इसीलिए हरियाणा साहित्य अकादमी के कार्यो पर अंगुली उठाते-उठाते राज्यपाल भवन के सामने भी पहुंच गए. इस चुभन की प्रतिक्रिया में कई स्तरीय ग्रन्थ तथा उसके सम्पादक भी लपेटे में आ गए हैं. परन्तु एक बात निश्चित है कि शोध-छात्रों एवं पैनी नजर पाठकों के लिए यह खण्ड बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा.

चौथे खण्ड 'कचहरी में कोहिनूर' लघुकथा संग्रह. संग्रह में सम्मिलित अधिकांश लघु कथाएं न्याय परिसर में जन्म लेकर 'मनमौजी' के जेहन में पली बढ़ी है. उनका भरण-पोषण मनमौजी की टेबल पर हुआ है. इसलिए इनको पवन-पुत्र कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी.

समीक्ष्य संग्रह में लेखक 'मनमौजी' ने आम आदमी के साथ घट रही घटनाओं का केवल चित्रण ही नहीं किया, अपितु उनका मार्मिक प्रस्तुतिकरण भी किया है. लगता है यह खण्ड सभी खण्डों की पंक्ति में अधिक कद्दावर दिखाई पड़ रहा है. यह लघुकथा लेखक मनमौजी की आत्मा भी है. हर लघुकथा के मर्म को जाने, लेखनी को पहचानने के लिए प्रकाशक की कलम से पृष्ठ को देख लेना ही संतुष्टि भर होगा. यह खण्ड स्वयं ही लेखक को साधुवाद कहने में सक्षम है.

पांचवा खण्ड 'तेरे नाम मेरे नाम' में डायरी के पन्नों को बहुत सतर्कता से संजोया मात्र है. प्रस्तुतिकरण कलात्मक एवं प्रशंसनीय है. इस संग्रह के माध्यम से मनमौजी ने अनेकों गणमान्य साहित्यकारों की कलम के माध्यम से अपने लेखन की चौधराहट को पक्का व प्रमाणित करवा लिया है.

**समीक्षकः** रामशरण युयुत्सु

**मूल्यः** रु० 150/ पेपर बैक रु० २००/साजिल्द

**प्रकाशकः** विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११